न्यूज़लेटर

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय

हरियाणा विधानसभा स्टेट पिटीशन कमेटी ने किया विश्वविद्यालय का दौरा; कहा विश्वविद्यालय की तकनीकों से बढ़ रही किसानों की पैदावार

हरियाणा सरकार की विधानसभा स्टेट पिटीशन कमेटी ने विश्वविद्यालय का दौरा किया और यहां किए जा रहे अनुसंधानों का अवलोकन किया। कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज की अगुवाई में विधायक श्री घनश्याम दास अरोड़ा की अध्यक्षता वाली इस कमेटी ने विश्वविद्यालय के विभिन्न विभागों और अनुसंधान फार्म का दौरा किया। कमेटी के सदस्यों को विशेष रूप से कपास अनुभाग, गिरी सेंटर, दीन दयाल उपाध्याय जैविक उत्कृष्टता केन्द्र, एग्री बिजनेस इंक्युबेशन सेंटर, कृषि अभियांत्रिकी एवं प्रौद्योगिकी महाविद्यालय, केंद्रीय लैब आदि का भ्रमण कराया गया और इनकी उपलब्धियों से अवगत कराया गया। सभी सदस्य विधायकों ने विश्वविद्यालय द्वारा किसानों के हित के लिए किए जा रहे अनुसंधान कार्यों व समय-समय पर दी जाने वाली कृषि सूचनाओं को बहुत ही उपयोगी बताया।

कमेटी के अध्यक्ष श्री घनश्याम दास अरोड़ा ने कहा कि इस विश्वविद्यालय की बदौलत हरियाणा प्रदेश केंद्रीय खाद्यान भंडारण में महत्ती योगदान दे रहा है। किसानों को विभिन्न फसलों की उन्नत किस्में व आधुनिक तकनीकें विश्वविद्यालय द्वारा मुहैया करवाई जा रही हैं जिनसे किसानों की फसलों की पैदावार भी निरंतर बढ़ रही है। उन्होंने किसानों से आह्वान किया कि वे विश्वविद्यालय के साथ जुड़ें और यहां मिलने वाली सभी जानकारियों व सुविधाओं का भरपूर फायदा उठाएं।

यहां उल्लेखनीय है कि हरियाणा विधानसभा स्टेट पिटीशन कमेटी के सदस्य इस विश्वविद्यालय में कमेटी की आयोजित की गई बैठक में भाग लेने आये थे जिन्होंने बैठक के पश्चात् विश्वविद्यालय का दौरा किया। बैठक में गोहाना के विधायक श्री जगबीर सिंह मलिक, झज्जर की विधायक श्रीमती गीता भुक्कल, महम के विधायक श्री बलराज कुंडू, रादौर के विधायक श्री संजय सिंह, कलानौर की विधायक श्रीमती शकुंतला खटक व कैथल के विधायक श्री लीलाराम शामिल हुए थे।

अंतर्वस्तु

कृषि मेला आयोजित, आईसीएआर के महानिदेशक ने किया शुभारम्भ	2
बागवानी अधिकारियों की वर्चुअल कार्यशाला, कृषि मंत्री ने किया उद्घाटन	3
प्रो. काम्बोज को मिला गुजवि के कुलपति का अतिरिक्त कार्यभार	3
विश्वविद्यालय में विकसित बाजरा की किस्में दक्षिण भारत में भी लहराएंगी परचम	4
23 छात्रों को देश के प्रमुख संस्थानों में मिला प्रवेश	4
विश्वविद्यालय को राष्ट्रीय सेवा योजना के तहत मिले दो राष्ट्रीय पुरस्कार	5
कुलपति ने मिट्टी-पानी जांच एवं प्रदर्शनी वाहन को दिखाई हरी झंडी	5
ई-मौसम सेवा को हरियाणा सरकार व आईसीएआर की वेबसाइट पर भी मिला स्थान	6
गृह विज्ञान महाविद्यालय में स्मार्ट क्लास रूम स्थापित	6
एयर राइफल एवं पिस्टल शूटिंग रेंज स्थापित	7
अधिक लाभ हेतु किसान करें कृषि उत्पादों का मूल्य संवर्धन: कुलपति	8
कपास फसल में श्रम को कम करने के लिए अभियांत्रिकी हस्तक्षेप विषय पर वेबिनार	11
क्षेत्रीय अनुसंधान केंद्र समाचार	12
कृषि विज्ञान केन्द्र समाचार	13
संक्षिप्त समाचार	13-15

संरक्षक
प्रो. बी.आर. काम्बोज
कुलपति

संपादक
डॉ. संदीप आर्य
मीडिया सलाहकार

मुख्य संपादक
अनुसंधान निदेशक

University Publication No.
CCSHAU/PUB#18-0026-2021-11-3

कृषि मेला आयोजित, आईसीएआर के महानिदेशक ने किया शुभारम्भ

कृषि के लिए जल एक महत्वपूर्ण संसाधन है। जल का उचित प्रबंधन न होने से करीब 70 प्रतिशत सिंचाई का जल व्यर्थ बह जाता है। इसलिए कृषि वैज्ञानिकों द्वारा विकसित तकनीकों और विभिन्न फसलों की उन्नत किस्मों को किसान ज्यादा से ज्यादा व्यवहारिक रूप से अपनाएं। ये विचार भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद् (आइसीएआर), नई दिल्ली के महानिदेशक डॉ. त्रिलोचन महापात्र ने व्यक्त किए। वह विश्वविद्यालय की ओर से आयोजित कृषि मेला (रबी) के शुभारंभ अवसर पर ऑनलाइन माध्यम से जुड़कर बतौर मुख्यातिथि संबोधित कर रहे थे। कार्यक्रम में लाला लाजपतराय पशु चिकित्सा एवं पशु विज्ञान विश्वविद्यालय (लुवास) के कुलपति डॉ. गुरदयाल सिंह विशिष्ट अतिथि थे जबकि अध्यक्षता चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने की।

सिंचाई में जल का प्रबंधन जरूरी : डॉ० त्रिलोचन महापात्र

मुख्यातिथि ने कहा कि हरियाणा जैसे प्रदेश में इतनी ज्यादा मात्रा में पानी का बेकार जाना चिंता का विषय है। उन्होंने कहा जल की लगातार बढ़ती खपत के चलते कृषि क्षेत्र के लिए जल की मात्रा घटी है। गेहूं-धान फसल चक्र वाले क्षेत्रों में भू-जल के अति दोहन के कारण भी जल स्तर निरन्तर गिरता जा रहा है। इसलिए कृषि के लिए जल की उपलब्धता एक मुख्य समस्या के रूप में उभरकर आ रही है। यदि प्राकृतिक संसाधनों का दोहन इसी तरह जारी रहा तो हरियाणा में आने वाले समय में सिंचाई तो दूर की बात, लोगों को पीने के लिए स्वच्छ जल की भारी कमी हो सकती है तथा इस कारण से कृषि उत्पादन में 30 प्रतिशत तक कमी हो सकती है।

बूंद-बूंद पानी की करें बचत: प्रो. काम्बोज

विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने कहा कि कोरोना महामारी के चलते दो वर्ष बाद ऑफलाइन कृषि मेला आयोजित किया गया है, जिसमें भारी संख्या में किसानों ने हिस्सा लिया है। उन्होंने जल संरक्षण को समय की मांग बताते हुए जल संसाधनों के बेहतर प्रयोग, वाटरशेड विकास, वर्षा जल संचय, उन्नत तकनीकों से पानी का उचित प्रबंधन करने की आवश्यकता पर बल दिया। उन्होंने कहा इजराइल जैसे छोटे देश के प्राकृतिक संसाधन कृषि के अनुरूप नहीं है फिर भी यह देश विश्व में आधुनिक कृषि तकनीकों के मामलों में सबसे आगे है। पानी के सदुपयोग के लिए हमारे किसानों को भी इजराइल द्वारा विकसित सिंचाई की तकनीकों को अपनाना होगा। लुवास के कुलपति डॉ. गुरदयाल सिंह ने कहा कि कृषि मेले में जो व्यावहारिक रूप से सीखने को मिलता है वह ऑनलाइन माध्यम से संभव नहीं है।

हजारों किसानों ने कृषि मेले में लिया भाग

कृषि मेला में हरियाणा तथा पड़ोसी राज्यों से करीब 52 हजार किसानों ने भाग लिया। उन्होंने मेला स्थल से करीब 70 लाख रूपए के बीज, फलदार पौधों की नर्सरी व जैविक उर्वरक खरीदे। किसानों ने विश्वविद्यालय द्वारा प्रकाशित कृषि साहित्य में रूचि दिखाते हुए करीब 46 हजार रूपए के कृषि प्रकाशन भी खरीदे।

एग्रो-इण्डस्ट्रियल प्रदर्शनी रही मुख्य आकर्षण

कृषि मेले में एग्रो-इण्डस्ट्रियल प्रदर्शनी लगाई गई थी जो किसानों के लिए विशेष आकर्षण रही। इस प्रदर्शनी में चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, लुवास, एमएचयू करनाल व निजी कंपनियों की ओर से स्टालें लगाई गई जहां विभिन्न फसलों की उन्नत किस्मों, आधुनिक तकनीकों सहित आधुनिक कृषि यंत्रों की किसानों को जानकारी दी गई। इस दौरान विश्वविद्यालय से जुड़कर कृषि क्षेत्र में अपना नाम रोशन करने वाले प्रदेश के प्रगतिशील किसानों की ओर से लगाई गई स्टाल भी आकर्षण का केंद्र रही। इस अवसर पर किसानों के लिए प्रश्नोत्तरी सभा का आयोजन किया गया था, जिसमें कृषि वैज्ञानिकों ने किसानों के सवालों के जवाब दिए और उनकी समस्याओं का समाधान किया।

प्रगतिशील किसानों को किया गया सम्मानित

कृषि मेले के दौरान प्रत्येक जिले से एक प्रगतिशील किसान को कृषि क्षेत्र में किए गए बेहतर कार्य के लिए सम्मानित किया गया। इसके अतिरिक्त फसल प्रतियोगिता के विजेताओं के साथ-साथ पब्लिक व प्राइवेट सैक्टर के विभागों/कंपनियों द्वारा मेला में लगाई गई स्टालों की प्रतियोगिता के विजेताओं को भी सम्मानित किया गया।

बागवानी अधिकारियों की वर्चुअल कार्यशाला, कृषि मंत्री ने किया उद्घाटन

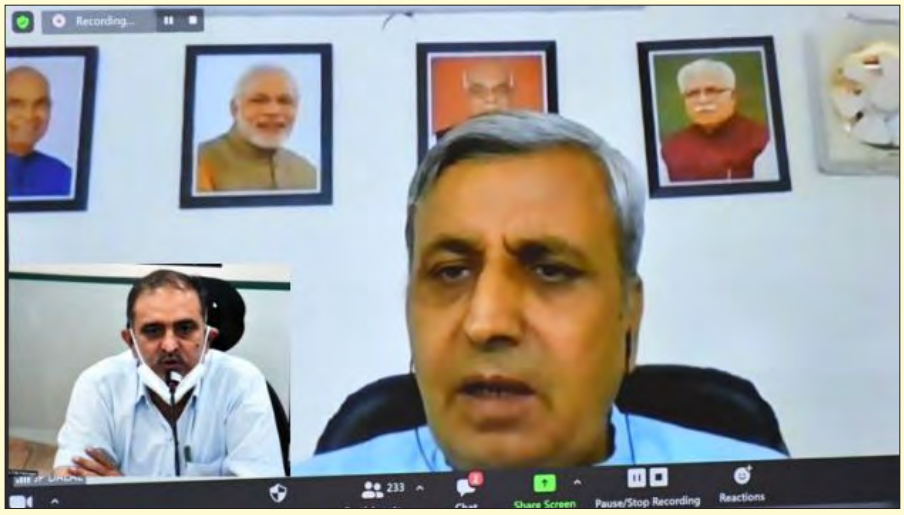

हरियाणा के कृषि एवं किसान कल्याण मंत्री श्री जयप्रकाश दलाल ने कहा कि किसान, वैज्ञानिक व कृषि अधिकारी मिलकर खेती को लाभकारी बनाने के लिए एक मिशन की तरह काम करें। इससे कृषि उत्पादन में वृद्धि के साथ किसानों की आमदनी में भी वृद्धि होगी। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय व बागवानी विभाग हरियाणा सरकार के संयुक्त तत्वावधान में बागवानी अधिकारियों की वर्चुअल कार्यशाला को बतौर मुख्यातिथि संबोधित करते हुए उन्होंने वैज्ञानिकों से आह्वान किया कि वे किसानों की समस्या को ध्यान में रखते हुए दुनिया की सर्वश्रेष्ठ तकनीक उन्हें प्रदान करे। कम पानी से तैयार होने वाली फसलों व बागवानी किस्मों व तकनीकों को विकसित करें और ज्यादा से ज्यादा किसानों को बागवानी व सब्जियों की खेती के लिए प्रेरित करें। उन्होंने विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों से बाजार में उपलब्ध संकर बीजों की तरह स्वयं इसी प्रकार के बीजों का ब्रांड तैयार कर कम लागत में किसानों को उपलब्ध करवाने के लिए कहा। उन्होंने कहा हरियाणा प्रदेश की सीमाएं राष्ट्रीय राजधानी से सट्टी हुई हैं जिसका किसानों को अधिक से अधिक फायदा उठाना चाहिए। इस अवसर पर उन्होंने प्रदेश के प्रगतिशील किसानों की सफलता की कहानी नामक पत्रिका का विमोचन भी किया।

क्षेत्र अनुसार तकनीक विकसित करें

विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने क्षेत्र की भौगोलिक परिस्थितियों को ध्यान में रखते हुए उन्नत तकनीकों व किस्मों को विकसित करने पर जोर दिया ताकि उस क्षेत्र के किसानों को इनका लंबे समय तक लाभ मिल सके। उन्होंने ऐसी तकनीकों को विकसित करने की आवश्यकता जताई जिनसे फसलों में रसायनों का कम से कम प्रयोग हो और लोगों को शुद्ध व रसायन रहित कृषि उत्पाद प्राप्त हो सके। उन्होंने किसानों से अपील की कि वे केवल विश्वविद्यालय द्वारा सिफारिश किए गए रसायनों व कीटनाशकों का ही प्रयोग करें।

तकनीकों से किसान हो लाभान्वित

इस अवसर पर महाराणा प्रताप बागवानी विश्वविद्यालय, करनाल के कुलपति प्रो. समर सिंह ने बागवानी के क्षेत्र में किए जा रहे विश्वविद्यालय के प्रयासों व अनुसंधानों के बारे में जानकारी दी। कृषि विभाग की अतिरिक्त

जारी पृष्ठ ...4

प्रो. काम्बोज को मिला गुजवि के कुलपति का अतिरिक्त कार्यभार

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज को गुरू जंभेश्वर विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय (गुजवि), हिसार के कुलपति का अतिरिक्त कार्यभार सौंपा गया है। यह कार्यभार उन्हें हरियाणा के राज्यपाल एवं गुरू जंभेश्वर विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय के कुलाधिपति माननीय श्री बंडारू दत्तात्रेय जी ने राज्य सरकार की स्वीकृति के उपरांत एक आदेश जारी कर सौंपा।

प्रो. काम्बोज चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति बनने के बाद से विश्वविद्यालय में अहम सुधार करने के साथ किसानों के द्वार पर उनकी समस्याओं के समाधान में निरंतर जुटे हुए हैं। उनका प्रयास है कि अधिक से अधिक किसानों को विश्वविद्यालय से जोड़कर यहां विकसित विभिन्न फसलों की उन्नत किस्मों व तकनीकों का उन्हे लाभ पहुंचाया जा सके। वे विश्वविद्यालय की शिक्षण, अनुसंधान व विस्तार गतिविधियों को बेहतर बनाने की दिशा में निरंतर जुटे हैं।

विश्वविद्यालय में विकसित बाजरा की किस्में दक्षिण भारत में भी लहराएंगी परचम

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में विकसित बाजरे की उन्नत किस्में अब न केवल हरियाणा बल्कि देश के अन्य प्रदेशों में भी अपना परचम लहराएंगी। इसके लिए विश्वविद्यालय ने पब्लिक-प्राइवेट-पार्टनरशिप के तहत दक्षिण भारत की तीन बीज कंपनियों से समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए हैं। समझौते के तहत विश्वविद्यालय में विकसित बाजरे की तीन उन्नत किस्मों एचएचबी 67 संशोधित, एचएचबी 299 व एचएचबी 311 का बीज तैयार कर ये कंपनियां किसानों तक पहुंचाएगी ताकि किसानों को उन्नत किस्मों का विश्वसनीय बीज मिल सके और उनकी पैदावार में वृद्धि हो सके।

इन कंपनियों के साथ हुआ समझौता

दक्षिण भारत की श्री साई सदगुरू सीड्स, हैदराबाद (तेलंगाना) के साथ बाजरे की किस्मों एचएचबी 67 संशोधित व एचएचबी 299 के लिए समझौता ज्ञापन पर कंपनी की तरफ से अम्बाती संजी रेड्डी, बाजरे की एचएचबी 299 व एचएचबी 311 के लिए मुरलीधर सीड् कॉरपोरेशन, कुरनूल (आंधप्रदेश) की ओर से मुरलीधर रेड्डी और इन्हीं दो किस्मों के लिए तीसरी कंपनी मैसर्ज देव एग्रीटेक, गुरूग्राम की ओर से डॉ. यशपाल ने हस्ताक्षर किए। विश्वविद्यालय की ओर से अनुसंधान निदेशक डॉ. एस.के. सहरावत ने इन समझौता ज्ञापनों पर हस्ताक्षर किए। इस अवसर पर विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने कहा कि जब तक विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों द्वारा किया गया शोध किसानों तक नहीं पहुंच पाएगा तब तक उसका कोई लाभ नहीं है। इसलिए इस तरह के समझौतों पर हस्ताक्षर कर विश्वविद्यालय का प्रयास है कि यहां विकसित उन्नत किस्मों व तकनीकों को अधिक से अधिक किसानों तक पहुंचाया जा सके। इसके लिए विश्वविद्यालय निरंतर प्रयासरत है।

ये है इन किस्मों की विशेषताएं

एचएचबी 67 (संशोधित) संकर किस्म में बायो टैक्नोलाजी विधि द्वारा जोगिया रोग प्रतिरोधी जीन डाले गए हैं। एचएचबी 299 व एचएचबी 311 अधिक लौह युक्त (73-83 पी.पी.एम.) संकर बाजरा की किस्में हैं। इनके सिट्टे शंकवाकार व मध्यम लंबे होते है। एचएचबी 299 किस्म 80-82 दिनों में जबकि एचएचबी 311 किस्म 75-80 दिनों में पककर तैयार हो जाती है। अच्छा रख रखाव करने पर एचएचबी 299 व एचएचबी 311 क्रमशः 49 व 45 मन प्रति एकड़ तक पैदावार देने की क्षमता रखती हैं। ये किस्में जोगिया रोगरोधी हैं।

पृष्ठ 3 से आगे ...

मुख्य सचिव डॉ. सुमिता मिश्रा ने संबोधित करते हुए कहा कि कृषि अधिकारी इस कार्यशाला में अर्जित ज्ञान का अधिक से अधिक लाभ उठाएं ताकि उसका स्पष्ट असर किसानों के खेतों में नजर आए। उन्होंने केंद्र व राज्य सरकार की किसान हितैषी योजनाओं के बारे में भी जानकारी दी। कृषि एवं किसान कल्याण विभाग, हरियाणा के महानिदेशक डॉ. हरदीप सिंह ने कहा कि इस कार्यशाला के दौरान जो भी सिफारिशें मंजूर की जाएं उनको ज्यादा से ज्यादा किसानों तक पहुंचाया जाना चाहिए।

विस्तार शिक्षा निदेशक डॉ. रामनिवास ने निदेशालय की ओर से किसान हितों के लिए की जा रही कल्याणकारी गतिविधियों के बारे में विस्तारपूर्वक बताया। अनुसंधान निदेशक डॉ. एस.के. सहरावत ने विश्वविद्यालय में फल व सब्जियों को लेकर चल रहे अनुसंधान कार्यों की व्याख्या की। हरियाणा बागवानी विभाग के महानिदेशक डॉ. अर्जुन सिंह ने भी अपने विचार रखे। बागवानी विभाग के संयुक्त निदेशक डॉ. रणबीर सिंह ने सभी प्रतिभागियों का धन्यवाद किया। मंच का संचालन डॉ. सुनील ढांडा ने किया। कार्यक्रम में विश्वविद्यालय के सभी महाविद्यालयों के अधिष्ठाता, निदेशक, विभागाध्यक्ष सहित सभी जिलों के बागवानी विभाग के अधिकारी, फील्ड अधिकारी व किसान शामिल हुए।

23 छात्रों को देश के प्रमुख संस्थानों में मिला प्रवेश

विश्वविद्यालय के 23 विद्यार्थियों का भारतीय प्रबंधन संस्थान (आईआईएम) व अन्य प्रतिष्ठित संस्थानों में दाखिला हुआ है। कुलपति प्रो. बी. आर. काम्बोज ने इस उपलब्धि पर विद्यार्थियों को बधाई दी व उनके उज्जवल भविष्य की कामना की। उन्होंने कहा कि विश्वविद्यालय के लिए बड़े गर्व की बात है कि एक साथ इतने विद्यार्थियों का आईआईएम व अन्य प्रतिष्ठित संस्थानों जैसे इरमा, नियाम व मैनेज में चयन हुआ है। उन्होंने इस उपलब्धि के लिए विद्यार्थियों के कठिन परिश्रम व विश्वविद्यालय के शिक्षकों द्वारा दिए गए मार्गदर्शन की प्रशंसा की। उन्होंने कहा कि शिक्षकों द्वारा दिया गया मार्गदर्शन और विद्यार्थियों का प्रयास निरंतर विश्वविद्यालय को नई ऊंचाइयों पर ले जा रहा है।

उपरोक्त 23 विद्यार्थियों में से सुमित जांगड़ा का आईआईएम कोजीकोड़े, समर सागवॉल का आईआईएम एफएबीएम और सक्षम भाटिया का आईआईएम रोहतक में चयन हुआ है। इनके अलावा बिजेंद्र का आईसीएआर-नार्म हैदराबाद, योगेश राज राणा व विशाल का नियाम जयपुर, सचिन, सचिन राणा, आशीष शर्मा, अजय गोदारा, समर सिंह, रोबिन घोटिया, नरेश, पारस, सुमित खटकड़, अमन, हरगुणजोत सिंह, केशव गोयल, जयवीर व जशमीत का इरमा गुजरात और पूनम, सौरभ व सचिन सोनी का मैनेज हैदराबाद में चयन हुआ है।

विश्वविद्यालय को राष्ट्रीय सेवा योजना के तहत मिले दो राष्ट्रीय पुरस्कार

समाज सेवा के क्षेत्र में बेहतर प्रदर्शन करने पर विश्वविद्यालय को दो राष्ट्रीय पुरस्कार प्राप्त हुए हैं। ये दोनों पुरस्कार वर्ष 2019-20 के लिए महामहिम राष्ट्रपति श्री रामनाथ कोविंद जी ने केन्द्रीय युवा कार्यक्रम एवं खेल मंत्रालय की ओर से राष्ट्रीय सेवा योजना दिवस के अवसर पर आयोजित कार्यक्रम में ऑनलाइन जुड़कर प्रदान किए। इस कार्यक्रम का आयोजन प्रवासी भारतीय केंद्र, नई दिल्ली द्वारा किया गया था जिसमें केंद्रीय युवा कार्यक्रम एवं खेल मंत्री श्री अनुराग ठाकुर भी उपस्थित रहे।

ये राष्ट्रीय पुरस्कार विश्वविद्यालय के एनएसएस अधिकारी डॉ. भगत सिंह को कार्यक्रम अधिकारी श्रेणी में जबकि स्वयंसेवक की श्रेणी में कृषि महाविद्यालय के स्वयंसेवक अभिषेक को प्रदान किए गए हैं। अवार्ड के तहत विश्वविद्यालय के नाम ट्राफी, एक सिल्वर मेडल और दो लाख रूपए की नकद राशि एनएसएस इकाई को और डेढ़ लाख रूपये व्यक्तिगत रूप से पुरस्कार हासिल करने वाले अधिकारी को प्रदान किए गए हैं। इसी प्रकार स्वयंसेवक को एक सिल्वर मेडल व एक लाख रूपए की नकद राशि दी गई है।

दृढ़ इच्छाशक्ति व मेहनत से हासिल होता है मुकाम

विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने इन राष्ट्रीय पुरस्कारों पर प्रसन्नता व्यक्त की और विजेताओं को बधाई दी। उन्होंने कहा कि मन में दृढ़ इच्छाशक्ति और मेहनत के कारण ही इंसान को लक्ष्य की प्राप्ति होती है। डॉ. भगत सिंह लगातार एनएसएस के माध्यम से समाज सेवा के क्षेत्र में उत्कृष्ट प्रदर्शन कर रहे हैं। उनके मार्गदर्शन में स्वयंसेवक भी बढ़ चढ़कर सामाजिक गतिविधियों में हिस्सा ले रहे हैं।

यहां उल्लेखनीय है कि डॉ. भगत सिंह को वर्ष 2017-18 में राज्य के सर्वश्रेष्ठ कार्यक्रम अधिकारी के अवार्ड से भी नवाजा जा चुका है। उनके मार्गदर्शन में गत वर्षों में 6 स्वयं सेवकों को राष्ट्रीय सेवा योजना के तहत राष्ट्रीय अवार्ड से सम्मानित किया जा चुका है।

कुलपति ने मिट्टी-पानी जांच एवं प्रदर्शनी वाहन को दिखाई हरी झंडी

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के वैज्ञानिक स्वयं किसानों के पास जाकर उनके खेत की मिट्टी-पानी की जांच करेंगे। इसके लिए विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने मोबाइल डाइगनोस्टिक कम एक्जीबीशन वैन (मिट्टी-पानी जांच एवं प्रदर्शनी वाहन) को हरी झंडी दिखाकर रवाना किया।

मिट्टी-पानी जांच के बिना नहीं मिल पाती उचित पैदावार : कुलपति

कुलपति ने कहा कि बिना खेत की मिट्टी-पानी जांच के किसान फसलों व बागवानी में आवश्यकतानुसार खाद-पानी नहीं दे पाते जिससे उन्हें उचित पैदावार प्राप्त नहीं होती। उन्होंने किसानों से आह्वान किया कि वे अपने खेत की मिट्टी की जांच समय-समय पर अवश्य करवायें। इससे न केवल खेतों में प्रयोग किए जाने वाले रसायनिक उर्वरकों का खर्च कम होगा बल्कि पर्यावरण संरक्षण भी होगा। उन्होंने कहा फसलों की गुणवत्ताशील व भरपूर पैदावार के लिए उर्वरकों का संतुलित प्रयोग बहुत महत्वपूर्ण है।

विस्तार शिक्षा निदेशक डॉ. रामनिवास ने

बताया कि विश्वविद्यालय के सभी कृषि विज्ञान केंद्रों पर यह वैन तय कार्यक्रम के अनुसार और आस-पास के क्षेत्रों के किसानों के खेतों की मिट्टी-पानी की जांच करेगी। इस वैन के माध्यम से किसानों को कृषि एवं किसान कल्याण विभाग व विश्वविद्यालय द्वारा किसान हितों के लिए किए जा रहे कार्यों की लघु फिल्म भी दिखाई जाएगी साथ ही विश्वविद्यालय की ओर से विभिन्न फसलों की उन्नत किस्में और विकसित तकनीकों के बारे में भी जानकारी दी जाएगी।

सह-निदेशक (विस्तार) डॉ. कृष्ण कुमार यादव ने बताया कि कृषि विज्ञान केंद्रों के इंचार्ज आस-पास के गांवों के किसानों को इस सुविधा के बारे जागरूक करेंगे और इसका अधिक से अधिक लाभ उठाने के लिए प्रेरित करेंगे।

ई-मौसम सेवा को हरियाणा सरकार व आईसीएआर की वेबसाइट पर भी मिला स्थान

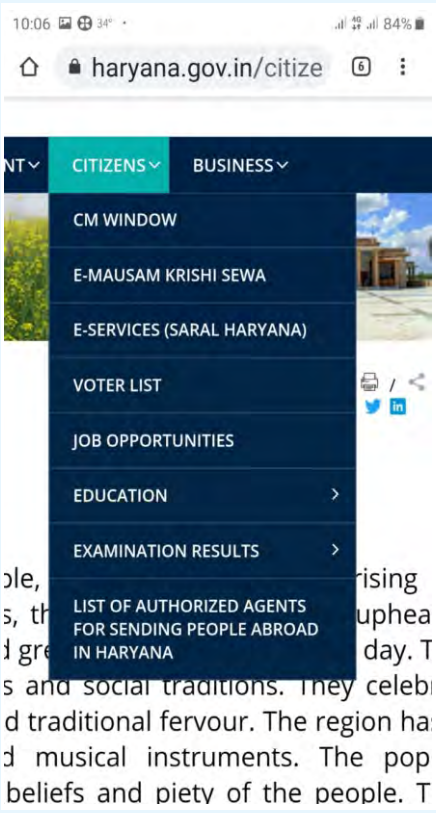

विश्वविद्यालय की ई-मौसम एसएमएस सेवा को हरियाणा सरकार की और भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद् (आईसीएआर) की वेबसाइट पर भी जगह मिली है। यह विश्वविद्यालय के लिए बहुत गौरव की बात है। राज्य के किसानों को मौसम की पूर्व जानकारी व कृषि परामर्श प्रदान करने वाली विश्वविद्यालय की यह सेवा किसानों के लिए बहुत ही फायदेमंद साबित हो रही है। इससे किसानों को फसलों की बिजाई, कटाई व कढ़ाई के लिए समय निर्धारण करने और फसलों में आने वाली समस्याओं से निजात मिल रही है जिससे वे आर्थिक नुकसान से बच रहे हैं।

बता दें कि किसानों के लिए वरदान साबित हो रही यह नि:शुल्क ई-मौसम सेवा वर्ष 2011 में शुरू की गई थी। वर्तमान में प्रदेश के करीब चार लाख किसान इस सेवा का लाभ उठा रहे हैं। इस सेवा के माध्यम से पंजीकृत मोबाइल नंबर पर किसानों के पास हर सप्ताह मौसम पूर्वानुमान व कृषि सलाह के संदेश भेजे जाते हैं। यह ई-मौसम एचएयू मोबाइल एप्प गूगल प्ले स्टोर पर उपलब्ध है जिसे किसान नि:शुल्क डाऊनलोड कर सकते हैं। अब तक इस मोबाइल एप्प को 60000 से ज्यादा लोग डाऊनलोड कर चुके हैं।

अधिकारियों व कर्मचारियों ने ली सद्भावना की शपथ

कुलपति सचिवालय में सद्भावना दिवस कार्यक्रम का आयोजन किया गया जिसमें कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने विश्वविद्यालय के अधिकारियों व कर्मचारियों को सद्भावना की शपथ दिलाई। इस अवसर पर कुलपति ने कहा कि सद्भावना दिवस मनाए जाने का उद्देश्य सभी धर्मों, भाषाओं और क्षेत्रों के लोगों के बीच राष्ट्रीय एकीकरण की भावना जागृत करना और हिंसा के विचार को त्यागकर लोगों के बीच आपसी सद्भाव को बढ़ावा देना है। उन्होंने कहा कि हमें जाति, संप्रदाय, क्षेत्र, धर्म अथवा भाषा का भेदभाव किए बिना भारतवासियों की भावनात्मक एकता व सद्भाव के लिए काम करना चाहिए। हमें हिंसा का सहारा लिए बिना सभी प्रकार के मतभेद बातचीत व संवैधानिक माध्यमों से सुलझाने चाहिए।

इस दौरान विश्वविद्यालय के सभी महाविद्यालयों व कार्यालयों में भी अधिकारियों द्वारा कर्मचारियों को सद्भावना की शपथ दिलाई गई।

गृह विज्ञान महाविद्यालय में स्मार्ट क्लास रूम स्थापित

विश्वविद्यालय के इंदिरा चक्रवर्ती गृह विज्ञान महाविद्यालय में स्मार्ट क्लास रूम बनाया गया है जिसका कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने उद्घाटन किया। स्मार्ट क्लास रूम में छात्राओं को आधुनिक सेवाएं जिसमें इंटरनेट, मल्टीमीडिया, टच स्क्रीन एलईडी व अन्य आवश्यक सेवाएं उपलब्ध होंगी।

कुलपति ने कहा कि हमारा प्रयास है कि जल्द ही सभी लेक्चर हॉल को स्मार्ट क्लास रूम में बदला जाए और विद्यार्थियों को बेहतरीन सुविधाएं प्रदान की जाएं। उन्होंने कहा कि इस महाविद्यालय ने आईसीएआर के संस्थानों में अपना अग्रणी स्थान बनाया है तथा लगातार शैक्षणिक गुणवत्ता में ऊंचाइयों को हासिल कर रहा है। केंद्रीय मानव संसाधन एवं विकास मंत्रालय द्वारा वर्ष 2021 के लिए जारी नेशनल इंस्टीट्यूशनल रैंकिंग फ्रेमवर्क (एनआईआरएफ) में इस महाविद्यालय ने देशभर में उत्कृष्ट प्रदर्शन किया है। भविष्य में इसे और अधिक बेहतर बनाने के लिए प्रयास जारी रहेंगे।

महाविद्यालय की अधिष्ठाता डॉ. बिमला ढांडा ने कहा कि इस क्लास रूम को आईसीएआर की राष्ट्रीय कृषि उच्चतर शिक्षा परियोजना के आईडीपी प्रोजेक्ट के तहत तैयार किया गया है जिसका छात्राओं को भरपूर लाभ मिलेगा। आईडीपी की नोडल अधिकारी एवं खाद्य एवं पोषण विभाग की अध्यक्ष डॉ. संगीता चहल सिंधु ने कार्यक्रम का संचालन किया।

एयर राइफल एवं पिस्टल शूटिंग रेंज स्थापित

विश्वविद्यालय के गिरि सेंटर में इंडोर शूटिंग रेंज का निर्माण किया गया है। दस मीटर की एयर राइफल एवं पिस्टल शूटिंग रेंज का कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने उदघाटन किया। इस अवसर पर कुलपति ने कहा कि विश्वविद्यालय के खिलाड़ियों को हर खेल सुविधा मुहैया करवाने के प्रयास किए जा रहे हैं। इस दिशा में आगे बढ़ते हुए यह इंडोर शूटिंग रेंज स्थापित की गई है जिसमें सभी इलेक्ट्रॉनिक मशीनों का प्रयोग किया गया है।

अभी तक विश्वविद्यालय के शूटिंग खिलाड़ी विश्वविद्यालय से बाहर प्राइवेट संस्था आदि के माध्यम से अभ्यास कर रहे थे, लेकिन अब उन्हें यह सुविधा विश्वविद्यालय परिसर में ही मिल सकेगी। उन्होंने कहा भविष्य में इस शूटिंग रेंज में अंतरराष्ट्रीय स्तर की ऑटोमेटिक मशीनों को भी स्थापित करने का प्रयास किया जाएगा ताकि यहां राष्ट्रीय व अंतरराष्ट्रीय स्तर की प्रतियोगिताओं का भी आयोजन किया जा सके।

यहां बता दें कि हाल ही में विश्वविद्यालय में 4 करोड़ 65 लाख रूपये की लागत से अंतरराष्ट्रीय सिंथेटिक ट्रैक का निर्माण किया गया है और लगभग एक करोड़ रूपये की लागत से विश्वविद्यालय के खेल परिसर गिरी सेंटर की फेस लिफ्टिंग का कार्य कराया गया है। इस अवसर पर अतिरिक्त छात्र कल्याण निदेशक डॉ. सुशील लेगा ने विश्वविद्यालय के विद्यार्थियों की खेल उपलब्धियों पर प्रकाश डाला।

फसल विविधिकरण, समय की जरूरत: कुलपति

निरंतर गिरते भूमिगत जलस्तर और भूमि की क्षीण हो रही उत्पादन क्षमता के चलते जल संरक्षण आधारित शोध और फसल विविधिकरण को बढ़ावा देना समय की मांग है। यह विचार विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने विश्वविद्यालय के सस्य विज्ञान विभाग एवं बारानी खेती विभाग के वैज्ञानिकों की समीक्षा बैठक के दौरान संबोधित करते हुए व्यक्त किए। उन्होंने वैज्ञानिकों द्वारा किसानों की समस्याओं के अनुरूप शोध कार्य करने पर बल दिया और कहा कि वर्तमान समय में भौगोलिक परिस्थितियों और मौसम में बदलाव के मद्देनजर नए अनुसंधान करने की जरूरत है।

अनुसंधान निदेशक डॉ. एस.के. सहरावत ने कहा कि विश्वविद्यालय में किए जा रहे अनुसंधान किसानों के लिए बहुत लाभप्रद साबित हो रहे हैं। विभागाध्यक्ष डॉ. एस.के. ठकराल ने विभाग में चल रहे विभिन्न अनुसंधान कार्यों की विस्तृत जानकारी दी। बैठक में अतिरिक्त अनुसंधान निदेशक डॉ. नीरज कुमार, परियोजना निदेशक डॉ. सतीश खोखर सहित विभिन्न विभागों के अध्यक्षों व वैज्ञानिकों ने हिस्सा लिया और विभाग में चल रहे शोध कार्यों के लिए विभिन्न पहलुओं पर चर्चा करते हुए बहुमूल्य सुझाव दिए।

हर्षोल्लास से मनाया गया स्वतंत्रता दिवस

विश्वविद्यालय में स्वतंत्रता दिवस हर्षोल्लास से मनाया गया। विश्वविद्यालय के कैंपस स्कूल में आयोजित समारोह में कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने तिरंगा फहराया और स्वतंत्रता दिवस की सभी को बधाई दी। उन्होंने देश को आजाद कराने में अपने प्राणों की आहुति देने वाले रणबांकुरों को श्रद्धांजलि दी और लोगों से शहीदों के सपनों को साकार करने के लिए मिलकर प्रयास करने का आह्वान किया।

प्रो. काम्बोज ने कहा कि आजादी के बाद देश ने प्रौद्योगिकी, विज्ञान, खेलों, शिक्षा, कृषि आदि प्रत्येक क्षेत्र में बहुत प्रगति की है। वर्तमान में भी कृषि, खेल व रक्षा के क्षेत्र में हरियाणा का अतुलनीय योगदान है। उन्होंने कहा प्रदेश सरकार की ओर से अनेक कल्याणकारी योजनाएं शुरू करके प्रदेश के विकास का पहिया और अधिक तेज किया गया है। देश के केंद्रीय खाद्यान भंडार में यह प्रदेश अहम योगदान दे रहा है। किसानों की आमदनी बढ़ाने व फसलों के उत्पादन में बढ़ोतरी के लिए विश्वविद्यालय की ओर से निरंतर विभिन्न फसलों की उन्नत किस्मों व तकनीकों को विकसित किया जा रहा है जो किसानों के लिए बहुत ही लाभकारी साबित हो रही हैं। इससे पूर्व कुलपति ने सहपत्नी कैंपस स्कूल प्रांगण में

पौधारोपण किया।

कार्यक्रम में कैंपस स्कूल के विद्यार्थियों द्वारा नुक्कड़ नाटक के माध्यम से समाज में व्याप्त कुरीतियों जैसे भ्रूण हत्या, बाल मजदूरी, आतंकवाद आदि पर कटाक्ष किया गया। देशभक्ति से ओतप्रोत गीत, भाषण व कविता पाठ भी प्रस्तुत किए गए। इस अवसर पर कैंपस स्कूल की नियंत्रण अधिकारी डॉ. आशा क्वात्रा, प्रिंसिपल सोमा शेखरा सरमा धुलिपाला सहित विश्वविद्यालय के अधिकारीगण, विभागाध्यक्ष व कैंपस स्कूल के विद्यार्थी और स्टाफ सदस्य मौजूद रहे।

अधिक लाभ हेतु किसान करें कृषि उत्पादों का मूल्य संवर्धनः कुलपति

किसानों को अपनी आमदनी बढ़ाने के लिए कृषि पैदावार बढ़ाने के साथ कृषि उत्पादों के मूल्य संवर्धन पर ध्यान देना होगा। वैज्ञानिकों को भी इस दिशा में आगे बढ़कर किसानों की मदद करनी होगी। ये विचार विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने गांव उमरा में आयोजित किसान गोष्ठी में बतौर मुख्यातिथि किसानों को संबोधित करते हुए व्यक्त किए। उन्होंने कहा कि किसानों को वैज्ञानिकों की सलाह व सरकार की सुविधाओं का भरपूर लाभ उठाना चाहिए। प्रदेश व केंद्र सरकार किसानों के हित के लिए नित नई कल्याणकारी योजनाएं लागू कर रही हैं। किसानों को परम्परागत खेती त्यागकर समन्वित खेती व फसल विविधिकरण पर ध्यान देना चाहिए और अपने उत्पादों को बेचने के लिए बिचौलिया प्रथा को खत्म करके किसान उत्पादक समूह बनाने चाहिए। ग्राहकों से सीधे जुड़कर अधिक लाभ कमाना चाहिए। उन्होंने कहा किसान दूध, गेहूं, बाजरा व अन्य फसलों के उत्पाद बनाने का विश्वविद्यालय से प्रशिक्षण हासिल करके स्वरोजगार स्थापित भी कर सकते हैं।

कुलपति ने कहा कि किसानों की समस्याओं के समाधान के लिए इस बार विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों की टीम फील्ड में जाकर लगातार जुटी हुई है ताकि किसानों को विगत वर्षों की भांति कम से कम समस्याओं का सामना करना पड़े। राज्य सरकार व माननीय कृषि मन्त्री श्री जय प्रकाश दलाल भी विश्वविद्यालय के साथ मिलकर लगातार किसानों की समस्याओं को लेकर विचार विमर्श कर रहे हैं और भविष्य की योजनाओं की रूपरेखा तैयार कर रहे हैं।

इस अवसर पर विस्तार शिक्षा निदेशक डॉ. रामनिवास ने कृषि वैज्ञानिकों से आह्वान किया कि वे भविष्य में भी किसानों के साथ मिलकर उनकी समस्याओं के निदान के लिए जुटे रहें। अनुसंधान निदेशक डॉ. एस.के. सहरावत ने कहा कि किसानों को कृषि वैज्ञानिकों द्वारा समय-समय पर दी जाने वाली सलाह व कीटनाशकों को लेकर की गई सिफारिशों को अपनाना चाहिए। इस दौरान डॉ. अनिल यादव, डॉ. ओमेंद्र सांगवान, सस्य वैज्ञानिक डॉ. करमल सिंह मलिक, कीट वैज्ञानिक डॉ. अनिल जाखड़ व पौध रोग विशेषज्ञ डॉ. मनमोहन सिंह ने कपास की फसल की अधिक पैदावार हासिल करने के लिए उपयुक्त सस्य क्रियाओं, बीमारियों व कीटों के प्रति जागरूक किया।

भारतीय हॉकी टीम की खिलाड़ी उदिता को किया सम्मानित

टोक्यों ओलिंपिक में खेल चुकी भारतीय हॉकी टीम की खिलाड़ी उदिता को विश्वविद्यालय की ओर से सम्मानित किया गया। विश्वविद्यालय के गिरि सैंटर में आयोजित इस सम्मान समारोह में कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज मुख्यातिथि जबकि हिसार के विधायक डॉ. कमल गुप्ता विशिष्ट अतिथि के तौर पर उपस्थित थे।

कुलपति ने उदिता को बधाई दी और कहा भविष्य में भी यूं ही अपने परिवार व देश का नाम अंतरराष्ट्रीय स्तर पर रोशन करते रहना। आप देश के अन्य खिलाड़ियों के लिए प्रेरणा स्त्रोत व रोल मॉडल बन चुकी हो। उन्होंने कहा कठिन पारिवारिक परिस्थितियों के बावजूद भी आप निरंतर अपने पथ पर अग्रसर रही है। इसी का परिणाम है कि आज वह इस मुकाम पर पहुंची है। उन्होंने कहा प्रदेश सरकार खिलाड़ियों को बहुत प्रोत्साहन दे रही है। यह गर्व का विषय है कि ओलिंपिक खेलों में देशभर में हरियाणा के खिलाड़ियों की भागीदारी सबसे अधिक है।

विधायक डॉ. कमल गुप्ता ने खिलाड़ी उदिता व उसके परिजनों को बधाई दी और आशा जताई कि वह भविष्य में भी देश का नाम रोशन करती रहेगी। इस अवसर पर खिलाड़ी उदिता ने हॉकी के जूनियर खिलाडियों को दिन-रात मेहनत कर अपने लक्ष्य की ओर बढ़ते रहने का आह्वान किया। उन्होंने कहा कि ओलिंपिक में खेलना उनके स्वर्गवासी पिता का सपना था जो अब जाकर पूरा हुआ है।

कार्यक्रम में हॉकी के वाइस प्रेसीडेंट सुनील मलिक, छात्र कल्याण निदेशक डॉ. देवेंद्र सिंह दहिया, विश्वविद्यालय के हॉकी के सह-प्राध्यापक व कोच आजाद सिंह मलिक, साई, हिसार के इंचार्ज हरभजन सिंह व हिसार हॉकी के प्रधान मनदीप मलिक उपस्थित थे।

वर्ल्ड कार फ्री डे पर पर्यावरण संरक्षण का दिया संदेश

वर्ल्ड कार फ्री डे के अवसर पर कुलपति प्रो. बी. आर. काम्बोज ने पर्यावरण संरक्षण व ईंधन बचाने का संदेश देते हुए साइकिल चलाकर अपने कार्यालय पहुंचे।

कुलपति ने कहा कि वर्तमान समय में देश की सड़कों पर हर रोज लाखों गाड़ियां दौड़ती हैं और जहरीला धुंआ वातावरण में छोड़ती हैं जो अनेक बीमारियों का कारण बनता है। इसलिए सभी को ज्यादा से ज्यादा पब्लिक ट्रांसपोर्ट का उपयोग करना चाहिए और अधिक से अधिक पेड़ लगाने चाहिए। उन्होंने आम जन से आह्वान किया कि वे अपने आस-पास की दूरी तय करने के लिए किसी वाहन की अपेक्षा साइकिल प्रयोग करें या फिर पैदल चलें। इससे प्रतिदिन सैंकड़ों लीटर पेट्रोल की खपत कम होगी और पर्यावरण भी प्रदूषित होने से बचेगा। चिकित्सकों के अनुसार साइकिल चलाने व पैदल चलने से न केवल शारीरिक बल्कि मानसिक स्वास्थ्य भी ठीक रहता है। यह एक बेहतर एक्सरसाइज है।

आँखों का नि:शुल्क जांच शिविर

विश्वविद्यालय के गैर शिक्षक कर्मचारी संघ की ओर से आँखों के नि:शुल्क जांच शिविर का आयोजन किया गया। कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने इस शिविर का उद्घाटन किया। उन्होंने इस शिविर के आयोजन के लिए गैर शिक्षक कर्मचारी संघ की प्रशंसा की। उन्होंने कहा हमें जहां भी मौका मिले सदैव समाज सेवा के लिए तत्पर रहना चाहिए। इस दौरान उन्होंने गैर शिक्षक संघ परिसर में पौधारोपण किया और संघ कार्यालय का जीर्णोद्धार उपरांत उद्घाटन भी किया।

उपरोक्त संघ के प्रधान श्री दिनेश कुमार राड़ ने बताया कि इस जांच शिविर का आयोजन विश्वविद्यालय के पैनल पर स्थित आई क्यू अस्पताल के सहयोग से किया गया जिसमें करीब तीन सौ लोगों की आँखों की नि:शुल्क जांच की गई और उन्हें दवाइयां वितरित की गई। भविष्य में भी संघ विश्वविद्यालय प्रशासन के साथ मिलकर इस प्रकार के सामाजिक कार्यों व शिविरों का आयोजन करता रहेगा।

हरियाणा कला उत्सव का आयोजन, रंगारंग कार्यक्रमों में झूमे दर्शक

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में हरियाणा कला उत्सव का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में कुलपति प्रो. बी.आर काम्बोज बतौर मुख्यातिथि उपस्थित हुए जबकि हरियाणा कला परिषद् के निदेशक श्री संजय भसीन इस अवसर पर विशिष्ट अतिथि थे।

प्रो. काम्बोज ने कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए कहा कि हरियाणवी कला व संस्कृति को बचाने में हरियाणा कला उत्सव जैसे कार्यक्रम महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं। ऐसे कार्यक्रमों के माध्यम से विभिन्न विधाओं जैसे रागिनी, भजन, लोकगीत व लोकनृत्य आदि का विकास होता है। शिक्षण संस्थानों में इस तरह के आयोजनों से विद्यार्थियों में भी अपनी संस्कृति के प्रति रूचि बढ़ती है जो इसके संरक्षण में सहायक होती है। इससे तीज-त्यौहारों पर गाए जाने वाले गीतों व नृत्यों को पुनर्जीवित करने का अवसर मिलता है। उन्होंने कहा कि कोरोना महामारी के चलते ऐसे आयोजन लगभग बंद ही हो गए थे, ऐसे में सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन इस महामारी के चलते उत्पन हुए मानसिक अवसादों को काफी हद तक दूर करने में मदद करते हैं। कार्यक्रम का आयोजन छात्र कल्याण निदेशालय के अंतर्गत म्यूजिक एवं ड्रामाटिक क्लब द्वारा हरियाणा कला परिषद् हिसार डिवीजन के सहयोग से आजादी के अमृत महोत्सव के तहत किया गया था।

इस अवसर पर हरियाणा कला परिषद् के निदेशक संजय भसीन ने कहा कि कोरोना महामारी का लोक कलाकारों पर सबसे ज्यादा प्रभाव पड़ा है। ऐसे आयोजनों से दोबारा से जीवन पटरी पर आने लगा है, जो एक शुभ संकेत है। छात्र कल्याण निदेशक डॉ. देवेन्द्र सिंह दहिया ने कार्यक्रम की विस्तृत जानकारी देते हुए बताया कि ऐसे कार्यक्रमों के आयोजन का मुख्य उद्देश्य हरियाणवी संस्कृति को पुनर्जीवित करने का है।

रंगारंग प्रस्तुतियों ने मोहा मन

कार्यक्रम की शुरूआत हरियाणवी लोक कलाकार महावीर गुड्डू की शानदार लोक संस्कृति को दर्शाती प्रस्तुति से हुई। इसके बाद सावन के गीत, प्रदेश गए पति का वियोग दशा के गीत, देशभक्ति गीत, आल्हा सहित चुटकुलों की एक के बाद एक मनमोहक प्रस्तुतियों ने दर्शकों को झूमने पर मजबूर कर दिया। एक नन्ही कलाकार द्वारा भ्रूण हत्या को लेकर प्रस्तुत संगीतमयी प्रस्तुति ने सभागार का एकदम माहौल बदलते हुए सभी को इस कुरीति के प्रति सोचने पर मजबूर कर दिया।

कार्यक्रम में डॉ. संध्या शर्मा ने सभी का स्वागत किया जबकि डॉ. जीतराम शर्मा ने धन्यवाद प्रस्ताव प्रस्तुत किया। कार्यक्रम की नोडल ऑफिसर डॉ. अपर्णा जबकि आयोजक सचिव डॉ. संध्या शर्मा व सह-सचिव डॉ. देवेंद्र सिंह थे।

वैज्ञानिकों के कौशल संवर्धन के लिए प्रशिक्षण आयोजित

कृषि वैज्ञानिकों द्वारा किया गया अनुसंधान कार्य तभी सफल होगा जब उसे धरातल तक पहुंचाया जाए। इसके लिए लैब-टू-लैंड की रणनीति को अपनाकर वैज्ञानिकों को काम करना होगा ताकि उनके द्वारा विकसित तकनीकों का किसान अधिक से अधिक लाभ उठा सकें। यह आह्वान कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने विश्वविद्यालय के मानव संसाधन प्रबंधन निदेशालय द्वारा नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ एग्रीकल्चर एक्सटेंशन एंड मैनेजमेंट, हैदराबाद के सहयोग से आयोजित किए गए प्रशिक्षण में किया। कुलपति ने कहा कि वैज्ञानिकों एवं किसानों के बीच जब तक समन्वय स्थापित नहीं होगा तब तक प्रभावी अनुसंधान कार्य नहीं हो सकता। किसानों को अपने अनुभव वैज्ञानिकों से सांझा करने होंगे ताकि किसान की जरूरत व फायदे के अनुसंधान किए जा सकें।

मानव संसाधन प्रबंधन निदेशक डॉ. अतुल ढींगड़ा ने बताया कि इस रिफ्रेशर कोर्स का आयोजन शिक्षकों, वैज्ञानिकों व विस्तार विशेषज्ञों का कौशल एंव क्षमता संवर्धन के लिए किया गया है। कोर्स के माध्यम से प्रौद्योगिकी के हस्तांतरण के लिए नवीनतम पाठ्यक्रम ज्ञान, शिक्षण सामग्री, चयनित विस्तार विधियों के प्रयोग और कौशल के बारे में जानकारी दी जाएगी। उन्होंने बताया कि इस कोर्स में इस विश्वविद्यालय के अलावा पश्चिमी बंगाल, उत्तर प्रदेश, चंडीगढ़, पूणे, अंडमान एवं निकोबार और नागालैंड से कुल 32 प्रतिभागियों ने हिस्सा लिया। कोर्स के आयोजन में 'मैनेज' हैदराबाद के विस्तार शिक्षा निदेशक डॉ. के. श्रवणन व पाठ्यक्रम संयोजिका डॉ. जी. दया का विशेष सहयोग रहा। पाठ्यक्रम संयोजिका डॉ. मंजू मेहता ने कार्यक्रम की रूपरेखा के बारे में बताया जबकि डॉ. अंजू सहरावत ने कार्यक्रम का संचालन किया।

विद्यार्थी प्रतीक बना फ्लाइंग ऑफिसर

विश्वविद्यालय के एमएससी अंतिम वर्ष के छात्र प्रतीक का भारतीय वायुसेना में फ्लाइंग ऑफिसर के पद पर चयन हुआ है। विश्वविद्यालय के विद्यार्थियों का निरंतर विभिन्न उच्च शिक्षण संस्थानों और सेवाओं में चयन बहुत बड़ी उपलब्धि है। कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने प्रतीक के सेना में फ्लांइग ऑफिसर पद पर चयन के लिए उसे बधाई दी और उसके उज्ज्वल भविष्य के लिए शुभकामनाएं दीं।

प्रतीक वर्ष 2019 में दिल्ली में राजपथ पर आयोजित गणतंत्र दिवस परेड में विश्वविद्यालय की एनसीसी यूनिट के कैडेट के तौर पर हिस्सा ले चुका है और वह एक बहुत उम्दा धावक भी है।

दीन दयाल उपाध्याय जैविक खेती उत्कृष्टता केंद्र की हुई समीक्षा

विश्वविद्यालय के दीन दयाल उपाध्याय जैविक खेती उत्कृष्टता केंद्र की समीक्षा बैठक कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज की अध्यक्षता में हुई। बैठक में इस केंद्र की वर्ष 2021-22 की कार्ययोजना पर मंथन किया गया।

जैविक खेती की समग्र सिफारिशें विकसित करें

इस अवसर पर कुलपति ने कहा कि दिनों दिन जैविक उत्पादों की तरफ आम आदमी का रूझान बढ़ रहा है, लेकिन जैविक खेती की ओर अभी भी कम किसान आकर्षित हो रहे हैं। इसलिए वैज्ञानिक जैविक खेती की सभी फसलों की समग्र सिफारिशें विकसित करें और कम जोत वाले किसानों को इसके लिए ज्यादा से ज्यादा प्रेरित करें। कुलपति ने कहा कि यह विश्वविद्यालय उत्तर भारत का एक अनुठा विश्वविद्यालय है जहां जैविक खेती को बढ़ावा देने के लिए उत्कृष्टता केंद्र की स्थापना की गई है। उन्होंने वैज्ञानिकों से आह्वान किया कि अपने अनुसंधानों को इस तरह से आगे बढ़ाएं जिसमें सभी आवश्यक विषयों का समन्वय हो और अनुसंधान का एक पूरा पैकेज तैयार किया जाए जिसमें पैदावार, गुणवत्ता व प्रोसेसिंग शामिल हो।

सूक्ष्म सिंचाई में आने वाली समस्या का हो समाधान

अनुसंधान निदेशक डॉ. एस के सहरावत ने जैविक खेती के लिए सूक्ष्म सिंचाई विधि से फर्टीगेशन करने पर ड्रिपर बंद होने की संभावना का समाधान ढूंढने, फल वाले पौधों के बीच सब्जी व अन्य फसलों का अंतकरण व विभिन्न फसलों का पूरे साल का फसल चक्र विकसित करने के लिए अनुसंधानों पर ध्यान देने पर जोर दिया। उपरोक्त केंद्र के निदेशक डॉ. अनिल कुमार ने केंद्र में चल रही विभिन्न परियोजनाओं के बारे में विस्तारपूर्वक जानकारी दी और बताया कि यह केंद्र प्रदेश के किसानों को ऑर्गेनिक फल और सब्जियों को उगाने के लिए प्रेरित करने में अहम भूमिका निभा रहा है।

उल्लेखनीय है कि विश्वविद्यालय में उपरोक्त उत्कृष्टता केन्द्र की स्थापना वर्ष 2017 में की गई थी। इसका मुख्य उद्देश्य प्राकृतिक संसाधनों के सरंक्षण के साथ-साथ जहर मुक्त खेती को बढ़ावा देना है।

कपास फसल में श्रम को कम करने के लिए अभियांत्रिकी हस्तक्षेप विषय पर वेबिनार

विश्वविद्यालय के कृषि अभियांत्रिकी एवं प्रौद्योगिकी महाविद्यालय के फार्म मशीनरी एण्ड पावर इंजीनियरिंग विभाग द्वारा कपास की खेती में मानव श्रम को कम करने हेतु अभियांत्रिकी क्षेत्र में किए गए आविष्कार विषय पर वेबिनार का आयोजन किया गया। कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने इस वेबिनार का शुभारंभ किया।

कपास में मशीनीकरण अत्यंत उपयोगी

इस अवसर पर कुलपति ने कहा कि भारत को कपास की खेती के लिए सबसे बड़ा क्षेत्र होने का गौरव प्राप्त है। यहां कपास की खेती 10.5 मिलियन हेक्टेयर से 12.20 मिलियन हेक्टेयर भूमि में की जाती है, लेकिन उत्पादन जो वर्तमान में 501 कि.ग्रा./हेक्टेयर है, विश्व की औसत उपज (789 कि.ग्रा./हेक्टेयर) से कम है। हरियाणा में कपास लगभग 6.69 लाख हेक्टेयर क्षेत्र में उगाया जाता है, जिसमें औसत उत्पादन 571 कि.ग्रा./हेक्टेयर होता है। उन्होंने कहा कपास की पैदावार बढ़ाने और इसकी खेती को लाभकारी बनाने में मशीनीकरण अत्यंत उपयोगी साबित हो सकता है। इससे मानव श्रम को कम करने के साथ उत्पादन लागत को भी कम करने में मदद मिलेगी।

कपास की बौनी किस्में करें विकसित

अनुसंधान निदेशक डॉ. एस.के. सहरावत ने कहा कि हमें कपास की चुगाई हेतु उपलब्ध मशीनों का प्रचलन बढ़ाने के लिए कपास की बौनी तथा अर्धबौनी किस्में विकसित करने की आवश्यकता है जिससे इन मशीनों के परिचालन में दिक्कत नहीं आएगी। इस वेबिनार के प्रमुख वक्ता पंजाब कृषि विश्वविद्यालय लुधियाना से डॉ. मंजीत सिंह ने कपास की खेती में मशीनीकरण हेतु हो रहे अनुसंधान कार्य के साथ-साथ इस क्षेत्र में वर्तमान में उपलब्ध मशीनें तथा भविष्य में उपयोगी साबित होने वाली मशीनों के बारे में जानकारी दी। वेबिनार में इस विश्वविद्यालय से डॉ. विजया रानी, इंजी. भारत पटेल, इंजी. अनूप उपाध्याय तथा डॉ. प्रदीप राजन ने भी कपास की तकनीकों और उनके उपयोग पर अपने-अपने विचार रखे।

कपास की खेती में मानव श्रम को करें कम

इससे पूर्व मेजबान महाविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ. अमरजीत कालड़ा ने कहा कि विश्व में कपास की बढ़ती मांग को देखते हुए इसके उत्पादन में वृद्धि करने के साथ इसकी खेती में मानव श्रम को कम करने की आवश्यकता है। इनके लिए मशीनीकरण एक अत्यंत उपयोगी विकल्प है। इससे उत्पादन लागत भी घटेगी। उन्होंने शोधार्थियों से भारतीय कृषि परिस्थितियों को ध्यान में रखते हुए स्वचालित उच्च निकासी स्प्रेयर, एयर असिस्टेड स्प्रेयर, इलेक्ट्रॉस्टेटिक स्प्रेयर जैसी पौध संरक्षण तकनीकों को विकसित करने पर बल दिया।

फिट इंडिया फ्रीडम रन का आयोजन

प्रत्येक मनुष्य को स्वस्थ रहने के लिए 'फिटनेस की डोज, आधा घंटा रोज' के मंत्र को अपनी दिनचर्या का हिस्सा अवश्य बनाना चाहिए। इसके लिए प्रतिदिन योगाभ्यास, शारीरिक व्यायाम सहित अन्य गतिविधियों को अपनी जीवन शैली में शामिल करना चाहिए। ये विचार विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने व्यक्त किए। वे विश्वविद्यालय में केंद्र सरकार की ओर से मनाए जा रहे आजादी का अमृत महोत्सव के उपलक्ष्य में आयोजित फिट इंडिया फ्रीडम रन कार्यक्रम के उद्घाटन अवसर पर हरी झंडी दिखाने के उपरांत बोल रहे थे। उन्होंने कहा स्वास्थ्य अनमोल धन है, जो उम्र भर इंसान का साथ देता है।

फिट इंडिया फ्रीडम रन का आयोजन विश्वविद्यालय के छात्र कल्याण निदेशालय की ओर से किया गया था। कार्यक्रम में भारी संख्या में युवाओं, विश्वविद्यालय के कुलपति महोदय सहित कर्मचारियों व अधिकारियों ने दौड़ लगाकर फिट इंडिया फ्रीडम रन का संदेश दिया।

छात्र कल्याण निदेशक डॉ. देवेंद्र सिंह दहिया ने बताया कि इस कार्यक्रम का शुभारंभ 12 मार्च 2021 को माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी ने गुजरात के साबरमती आश्रम से किया था। इसका मुख्य उद्देश्य अधिक से अधिक लोगों को स्वस्थ व फिट रहने के लिए दौड़ और खेलकूद गतिविधियों को अपनी जीवन शैली में अपनाने के लिए प्रेरित किया जाना है।

संगोष्ठी/कार्यशाला/प्रशिक्षण में सहभागिता

- सुबोध अग्रवाल, व्यवसाय प्रबंधन विभाग ने मानव संसाधन प्रबंधन निदेशालय, चौ.च.सिं. हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार द्वारा स्टेटिस्टिकल टूल्स एंड टेक्नीकस फॉर एनालिसिस ऑफ एग्रीकल्चरल डाटा विषय पर आयोजित 21 दिवसीय रिफ्रैशर कोर्स में भाग लिया।
- डॉ. कृष्णा हुड्डा, भाषा एंव हरियाणवी संस्कृति विभाग ने हिन्दी विभाग, एसपीके महाविद्यालय, महाराष्ट्र द्वारा 6 जून, 2021 को हिन्दी साहित्य में थर्ड जेंडर विषय पर आयोजित नेशनल वेबिनार में भाग लिया।
- डॉ. पूनम मोर, भाषा एंव हरियाणवी संस्कृति विभाग ने इंग्लिश विभाग, गवर्नमेंट कॉलेज, धालियारा की ओर से क्रिएटिव एंड क्रिटिकल राइटिंग विषय पर 21 से 22 अगस्त, 2021 तक और जीजीएन इंस्टिट्यूट ऑफ मैनेजमेंट, लुधियाना द्वारा 6 सितंबर, 2021 को चैलेंजेज इन हायर एजुकेशन विषय पर आयोजित वेबिनार में भाग लिया।
- डॉ. देवेन्द्र सिंह, भाषा एवं हरियाणवी संस्कृति विभाग ने आई-एस.टी.ई.एम. बैंगलोर की ओर से 31 जुलाई, 2021 को, यूनिवर्सिटी ऑफ मैसूरू के सैंटर फॉर इनफार्मेशन साइंस एंड टैकनोलोजी द्वारा 2 अगस्त, 2021 को, 3 से 14 सितंबर, 2021 तक अलगप्पा यूनिवर्सिटी, कराईकुडी में डाटा एनालिसिस एंड रिसर्च मेथडालजी इन सोशल साइंसिज में गवर्नमेंट गर्ल्स पी जी कॉलेज, उज्जैन में 18 सितंबर, 2021 को आयोजित राष्ट्रीय प्रशिक्षण कार्यशाला में भी भाग लिया।

आजादी का अमृत महोत्सव के उपलक्ष्य में व्याख्यान श्रृंखला का आयोजन

केंद्र सरकार की ओर से मनाए जा रहे आजादी का अमृत महोत्सव के उपलक्ष्य में विश्वविद्यालय में ऑनलाइन व्याख्यान श्रृंखला आयोजित की गई जिसका शुभारंभ कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने किया। इस अवसर पर कुलपति ने कहा कि वर्ष 2050 तक विश्व की लगभग 10 अरब जनसंख्या में से प्रत्येक नौंवा व्यक्ति अल्पपोषित होगा, जिनकी ज्यादा संख्या विकासशील देशों में होगी। इस समस्या के समाधान के लिए विभिन्न विषयों के विशेषज्ञों को मिलकर काम करना होगा और खाद्यान्न उत्पादन में प्रमुख जैविक व अजैविक अवरोधों की पहचान करके उनके प्रबंधन के लिए एकजुट होकर निरंतर प्रयास जारी रखने होंगे। उन्होंने कहा यह विश्वविद्यालय खाद्य सुरक्षा के लिए फसलों की नई उन्नत किस्में व उनके उत्पादन की तकनीकें विकसित करने में अग्रणी संस्थान रहा है। वैज्ञानिकों को किसानों के बीच इन उन्नत तकनीकों के प्रचार-प्रसार को सुनिश्चित करना होगा।

इस अवसर पर सिडनी यूनिवर्सिटी आस्ट्रेलिया के सीरियल रस्ट जेनेटिक्स के प्रोफेसर डॉ. हरबंस वरियाणा ने खाद्य सुरक्षा प्राप्त करने के लिए तकनीकी प्रगति का कार्यान्वन विषय पर व्याख्यान दिया। उन्होंने कहा कि खाद्यान सुरक्षा एक महत्वपूर्ण विषय है और इसके लिए वैज्ञानिकों को मॉलिकूलर मार्कर का उपयोग करके बीमारियों, कीटों व अन्य अवरोधों के लिए रोधी डीएनए को चिन्हित कर उसका उपयोग फसलों की नई किस्में विकसित करने में किया जाना चाहिए। उन्होंने पारंपरिक फसल प्रजनन के साथ-साथ अन्य आधुनिक तकनीकों का प्रयोग किए जाने की भी सिफारिश की।

अफगानिस्तान व आस्ट्रेलिया के वैज्ञानिक भी हुए शामिल

कार्यक्रम का आयोजन विश्वविद्यालय के अनुसंधान निदेशालय की ओर से किया गया था जिसमें एमएचयू के अनुसंधान निदेशक डॉ. आर.के. गोयल सहित अफगानिस्तान व ऑस्ट्रेलिया के वैज्ञानिकों, भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान के वैज्ञानिकों, विश्वविद्यालय के सभी महाविद्यालयों के अधिष्ठाताओं, निदेशकों, विभागाध्यक्षों, विभिन्न संस्थानों के वैज्ञानिकों, विशेषज्ञों व विद्यार्थियों ने हिस्सा लिया।

कर्मचारी प्रशिक्षण सलाहकार समिति की बैठक

किसी भी संस्थान की प्रगति व उन्नति में वहां कार्यरत कर्मचारियों की बहुत अहम भूमिका होती है। इसलिए कर्मचारियों का योग्य एवं कार्य कुशल होना बहुत आवश्यक है। ये विचार कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने व्यक्त किए। वे विश्वविद्यालय के मानव संसाधन प्रबंधन निदेशालय की कृषि अनुसंधान एवं शिक्षा प्रबंधन अकादमी की ओर से आयोजित कर्मचारी प्रशिक्षण सलाहकार समिति की बैठक को संबोधित कर रहे थे। उन्होंने कहा कि चौ.च.सिं.ह.कृ.वि. में शिक्षक व गैरशिक्षक कर्मचारियों के ज्ञान, कौशल व योग्यता संवर्धन में यह अकादमी बेहतरीन कार्य कर रही है।

उन्होंने कहा कि उपरोक्त निदेशालय ने कोरोना महामारी के कठिन समय में भी कर्मचारियों के लिए प्रशिक्षणों का आयोजन करने का बहुत सराहनीय कार्य किया है। इस बैठक में भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद्, नई दिल्ली से डॉ. सीमा जग्गी, सहायक महानिदेशक, मानव संसाधन विकास और डॉ. संजीव गुप्ता, सहायक महानिदेशक (तिलहन एवं दलहन) ने भी अपने विचार रखे।

बैठक में मानव संसाधन प्रबंधन निदेशक डॉ. एम.एस. सिद्धपुरिया ने अकादमी की वार्षिक रिपोर्ट और उपलब्धियां प्रस्तुत की तथा आगामी वर्ष (2021-2022) का प्रशिक्षण कैलेंडर प्रस्तुत किया। उन्होंने बताया कि गत वर्ष देशभर से 319 कृषि विशेषज्ञों और 97 प्रशासनिक कर्मचारियों ने अकादमी द्वारा आयोजित किए गए प्रशिक्षणों में भाग लिया।

क्षेत्रीय अनुसंधान केंद्र समाचार

संरक्षित खेती पर जोर देने की जरूरत : कुलपति

वैज्ञानिकों को क्षेत्र विशेष की समस्याओं के अनुसार अनुसंधान कार्य करना चाहिए और भविष्य की योजनाएं भी उसी अनुरूप बनाई जानी चाहिए। यह बात विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने क्षेत्रीय अनुसंधान केंद्र बावल के तकनीकी कार्यक्रम की समीक्षा बैठक की अध्यक्षता करते हुए कही। प्रो. काम्बोज ने वैज्ञानिकों को सुझाव देते हुए कहा कि योजनाओं के निर्माण के साथ-साथ जलवायु आधारित शुष्क कृषि तकनीक एवं संरक्षित खेती पर अनुसंधान करने की जरूरत है। उन्होंने कहा कि बावल क्षेत्र में सिंचाई के लिए जल की उपलब्धता कम है, ऐसे में वहां फव्वारा एवं टपका सिंचाई को बढ़ावा दिया जाना चाहिए। उन्होंने इस केंद्र पर फसलों की उच्च गुणवत्ता, रोग एवं कीट रोधी किस्मों को विकसित करने तथा किसानों को उनका बीज उपलब्ध करवाये जाने पर बल दिया। उन्होंने वैज्ञानिकों से आह्वान किया कि कृषि विज्ञान केंद्र व क्षेत्रीय अनुसंधान केंद्र किसानों को विश्वविद्यालय द्वारा विकसित की गई उन्नत किस्मों व तकनीकों के बारे में ज्यादा से ज्यादा अवगत कराएं ताकि अधिकाधिक किसानों को उनका लाभ मिल सके।

विश्वविद्यालय के अनुसंधान निदेशक डॉ. एस.के. सहरावत ने क्षेत्रीय अनुसंधान केन्द्र, बावल में चल रहे विभिन्न अनुसंधान कार्यों की विस्तृत जानकारी दी। इस केन्द्र के क्षेत्रीय निदेशक डॉ. धर्मबीर यादव ने अनुसंधान केंद्र में जारी विभिन्न परियोजनाओं के बारे में विस्तारपूर्वक बताया व भविष्य की कार्ययोजना को लेकर चर्चा की। इस दौरान खरीफ-2020 में किए गए शोध कार्यों की प्रगति रिपोर्ट व खरीफ-2021 में किए जाने वाले शोध कार्यों की रूपरेखा प्रस्तुत की गई। गत वर्ष के परिणामों के अनुसार लोबिया फसल में पोटाश एवं सल्फर उर्वरक के प्रयोग की सिफारिश की गयी। बैठक में विभागाध्यक्ष और वैज्ञानिक मौजूद रहे जिन्होंने शोध के विभिन्न पहलुओं पर चर्चा करते हुए भविष्य के लिए बहुमूल्य सुझाव दिए।

कृषि विज्ञान केन्द्र समाचार

बासमती धान पर एक दिवसीय कार्यशाला

जल सरंक्षण के लिए हमें फसल विविधिकरण को अपनाना होगा। इससे न केवल किसान की आमदनी बढ़ेगी बल्कि जल के साथ मृदा का भी संरक्षण होगा। ये विचार विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने व्यक्त किए। वे फतेहाबाद जिला के गांव धोलू में आयोजित बासमती धान में कीटनाशकों का सुरक्षित एवं न्यायपूर्ण प्रयोग विषय पर एक दिवसीय कार्यशाला में बतौर मुख्यातिथि बोल रहे थे। कार्यक्रम का आयोजन कृषि विज्ञान केंद्र व एग्रीकल्चरल एंड प्रोसेसड फूड एक्सपोर्ट डेवलेपमेंट अथॉरटी (एपीडा) के संयुक्त तत्वावधान में किया गया था। उन्होंने किसानों से बासमत्ती धान में कीटनाशकों व फफूंदनाशकों का प्रयोग वैज्ञानिकों की सलाह से करने का आह्वान किया ताकि इसके निर्यात में बाधा उत्पन्न न हो और किसान को अच्छा भाव मिल सके। उन्होंने निरंतर गिर रहे भूमिगत जलस्तर को रोकने व भूमि की उर्वरा शक्ति बढ़ाने के लिए तिलहन व दलहन फसलों की खेती को बढ़ावा देने पर बल दिया। इस अवसर पर किसानों ने उन्हे पगड़ी पहनाकर व स्मृति चिन्ह भेंट करके सम्मानित किया।

विस्तार शिक्षा निदेशक डॉ. रामनिवास ने कृषि वैज्ञानिकों से किसानों की कृषि संबंधी समस्याओं का तत्परता से निदान करने का आहवान किया। एपिडा मोदीपुरम से डॉ. प्रमोद तोमर ने बासमती धान की कृषि क्रियाओं पर चर्चा करते हुए कम से कम कीटनाशकों के प्रयोग पर जोर दिया। इस अवसर पर डॉ. सरदूल मान ने धान में लगने वाले कीट, बीमारियों व सूत्रकृमि के समन्वित प्रबंधन जबकि डॉ. विकास हुड्डा ने कपास फसल में कीट प्रबंधन, सरसों व गेंहू की उन्नत किस्मों, बिजाई व खाद प्रबंधन पर विस्तृत जानकारी दी।

किसान गोष्ठी

कृषि विज्ञान केंद्र फतेहाबाद व कृषि एवं किसान कल्याण विभाग फतेहाबाद की ओर से गांव रामसरा में एक किसान गोष्ठी का आयोजन किया गया। कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने इस गोष्ठी का शुभारंभ किया। इस अवसर पर उन्होंने किसानों से आह्वान किया कि वे विश्वविद्यालय व इसके कृषि विज्ञान केंद्रों से जुड़कर अधिक से अधिक लाभ उठाएं। विश्वविद्यालय की ओर से निरंतर किसानों, महिलाओं व युवाओं के लिए विभिन्न प्रकार के प्रशिक्षण आयोजित किए जाते हैं जिनमें फसलों के मूल्य संवर्धन, दूध के मुल्य संवर्धन सहित बागवानी, समन्वित खेती, फसल विविधिकरण आदि के बारे में जानकारी दी जाती है। यहां से प्रशिक्षण हासिल कर वे स्वरोजगार स्थापित कर सकते हैं और अपनी आमदनी को बढ़ा सकते हैं। इसके अलावा विश्वविद्यालय में स्थित एग्री बिजनेस इंक्युबेशन सेंटर से जुड़कर वे रोजगार मांगने की बजाय रोजगार देने वाले बन सकते हैं।

अनुसंधान निदेशक डॉ. एस.के. सहरावत व विस्तार शिक्षा निदेशक डॉ. रामनिवास ने कृषि वैज्ञानिकों से आह्वान किया कि वे किसानों के साथ मिलकर उनकी समस्या के निदान के लिए जुटे रहें। डॉ. अनिल यादव, डॉ. ओमेंद्र सांगवान, डॉ. करमल मलिक, डॉ. अनिल जाखड़ व डॉ. मनमोहन सिंह ने किसानों को कपास फसल से संबंधित अपने व्याख्यान देकर जागरूक किया। गोष्ठी में प्रश्नोत्तरी कार्यक्रम और मिट्टी-पानी की जांच के अलावा मौसम संबंधी जानकारी के लिए नि:शुल्क पंजीकरण किया गया। गोष्ठी में मौजूद किसानों को फलदार पौधे व फसलों की समग्र सिफारिशों से संबंधित प्रकाशित सामग्री वितरित की गई। इस अवसर पर कपास संबंधी आधुनिक तकनीकों व कृषि समस्याओं को लेकर एक प्रदर्शनी का भी आयोजन किया गया।

संक्षिप्त समाचार

कृषि महाविद्यालय, हिसार

- कीट विज्ञान विभाग की तकनीकी कार्यक्रम की वार्षिक बैठक कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज की अध्यक्षता में हुई। बैठक में विभाग में जारी अनुसंधानों की समीक्षा की गई और आगामी वर्ष के लिए अनुसंधान कार्यों की योजना को अंतिम रूप दिया गया। ऑनलाइन आयोजित इस बैठक में कुलपति ने कीटों की रोकथाम के लिए ऐसी तकनीकी विकसित किए जाने पर जोर दिया जो मनुष्य के स्वास्थ्य व पर्यावरण के लिए सुरक्षित हो। उन्होंने बदलते जलवायु के दृष्टिगत फसलों पर कीटों की नई प्रजातियों के प्रकोप पर नजर रखने व उनकी समय पर रोकथाम के लिए कारगर उपाय खोजने हेतु भी वैज्ञानिकों से आह्वान किया। किसान जागरूकता के अभाव में फसलों में कीटनाशकों का अंधाधुंध व मिश्रित छिड़काव करते हैं जिसके दुष्प्रभावों के बारे में किसानों को जागरूक करने के साथ उन्हें फसलों का उत्पादन व आय बढ़ाने के लिए मधुमक्खी पालन अपनाने बारे प्रेरित करने की आवश्यकता है। बैठक में विभागाध्यक्ष डॉ. योगेश कुमार ने गत वर्ष के अनुसंधान कार्यों की प्रगति रिपोर्ट एवं आगामी वर्ष में किए जाने वाले अनुसंधान कार्यों को प्रस्तुत किया। बैठक में उपस्थित विभिन्न विभागाध्यक्षों व वैज्ञानिकों ने बहुमूल्य सुझाव दिए।
- उच्च गुणवत्ता व रोगरोधी बीजों से फसल उत्पादन में 20 प्रतिशत तक की वृद्धि हो सकती है। इसलिए कृषि वैज्ञानिकों को अधिकाधिक किसानों को उन्नत किस्मों के बीज उपलब्ध कराने चाहिए। यह बात कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने विश्वविद्यालय के बीज विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग की अनुसंधान परियोजना समीक्षा 2020-21 तथा तकनीकी कार्यक्रम 2021-22 की बैठक को संबोधित करते हुए कही। उन्होंने कहा एक पुरानी कहावत है ''जैसा बोओगे, वैसा काटोगे''। इसलिए बीज का गुणवत्तायुक्त होना बहुत महत्वपूर्ण है। बैठक को अनुसंधान निदेशक डॉ. एस. के. सहरावत, अतिरिक्त अनुसंधान निदेशक डॉ. नीरज कुमार व परियोजना निदेशक डॉ. सतीश खोखर ने भी संबोधित किया। इस अवसर पर बीज विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग के अध्यक्ष डॉ. के.डी. शर्मा ने अनुसंधान क्षेत्र में चल रही विभिन्न परियोजनाओं पर प्रकाश डाला और वर्ष 2021-22 की परियोजना के बारे में चर्चा की।

संक्षिप्त समाचार

- बाजरा व तिलहनी फसलों की अनुसंधान परियोजनाओं (खरीफ 2020) व तकनीकी कार्यक्रम (2021) की समीक्षा बैठक कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज की अध्यक्षता में हुई। बैठक में उपरोक्त फसलों पर चल रही विभिन्न परियोजनाओं बारे विस्तारपूर्वक बताया गया और भविष्य की कार्ययोजना पर चर्चा की गई। कुलपति ने बाजरा व तिलहन अनुभागों की उन्नत किस्मों के विकास में उपलब्धियों की सराहना करते हुए वैज्ञानिकों से भविष्य में भी यह प्रयास जारी रखने को कहा। उन्होंने बाजरा में सूक्ष्म सिंचाई विधि को लोकप्रिय बनाने के साथ किसानों को समयानुसार बाजरा व तिलहन फसलों के लिए सलाह देने को कहा। बैठक में डॉ. एस. के. पाहुजा ने उनके अनुभाग द्वारा विकसित की गई बाजरा की बायोफोर्टिफाइड हाइब्रिड एचएचबी 311 किस्म का उल्लेख किया। उन्होंने बताया कि यह किस्म राजस्थान, गुजरात, हरियाणा, पंजाब, दिल्ली, महाराष्ट्र और तमिलनाडू राज्यों के लिए जारी की गई है, जिसकी औसत पैदावार 37.5 क्विंटल प्रति हेक्टेयर है और यह किस्म पकने में 75-80 दिन का समय लेती है।
- सस्य विज्ञान विभाग ने खरपतवार अनुसंधान निदेशालय, जबलपुर के सहयोग से गाजर घास उन्मूलन अभियान व जागरूकता सप्ताह का आयोजन किया। इस अभियान के तहत कृषि विज्ञान केन्द्रों के माध्यम से किसानों को पर्यावरण व मानव स्वास्थ्य के लिए घातक इस खरपतवार के नियंत्रण के बारे में अवगत करवाया गया।
- कृषि मौसम विज्ञान विभाग के पूर्व अध्यक्ष डॉ. सुरेन्द्र सिंह कृषि मौसम वैज्ञानिक संघ (हिसार चैप्टर) के दो वर्ष के लिए अध्यक्ष चुने गए हैं। इससे पूर्व भी डॉ. धनखड़ वर्ष 2017 से 2019 तक इस संघ के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष के रूप में कार्य कर चुके हैं।
- चारा अनुभाग द्वारा आजादी का अमृत महोत्सव के उपलक्ष्य में गांव लुदास में किसान गोष्ठी का आयोजन किया गया। इस अवसर पर आनुवांशिकी एवं पौध प्रजनन विभाग के अध्यक्ष डॉ. एस.के. पाहुजा मुख्यातिथि थे। कार्यक्रम में किसानों को बेहतर पोषण के लिए आहार में मोटे अनाज जैसे ज्वार, बाजरा, रागी, कांगनी व अन्य मिलेटस को शामिल करने के लिए प्रेरित किया। वैज्ञानिकों ने किसानों को ज्वार का बीज तैयार करने, ज्वार की उन्नत किस्मों, सस्य क्रियाओं व ज्वार में कीट प्रबंधन बारे विस्तारपूर्वक बताया।

मौलिक विज्ञान व मानविकी महाविद्यालय

- उपरोक्त महाविद्यालय द्वारा उन्नत भारत अभियान एवं आदर्श ग्राम योजना के तहत गोद लिए हुए गांव नंगथला में आजादी का अमृत महोत्सव के उपलक्ष्य में पौधारोपण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। गांव के राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय के प्रांगण में आयोजित कार्यक्रम में महाविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ. राजबीर सिंह ने बताया कि हर माह गांव में कैम्प का आयोजन किया जाएगा। इस अवसर पर गांव वासियों को पौधों की महत्ता बताते हुए उन्हे छायादार व औषधीय पौधे वितरित किए गए। स्कूल प्रांगण में त्रिवेणी लगाई गई।
- भाषा एवं हरियाणवी संस्कृति विभाग की ओर से हिंदी दिवस मनाया गया। इस दौरान विश्वविद्यालय के विभिन्न महाविद्यालयों के विद्यार्थियों के बीच ऑनलाइन कविता पाठ का आयोजन किया गया जिसमें विद्यार्थियों ने बढ़-चढ़कर भाग लिया।
- वनस्पति विज्ञान एवं पौध शरीर क्रिया विभाग द्वारा आजादी का अमृत महोत्सव के उपलक्ष्य में डॉ. हरबंस बरियाना, प्रोफैसर, सीरियल रस्ट जिनेटिक्स एवं डॉ. उर्मिल बंसल, एसोसिएट प्रोफैसर, सिडनी विश्वविद्यालय, आस्ट्रेलिया के क्रमश: 6 व 22 जुलाई, 2021 को व्याख्यान आयोजित किए गए।

इंदिरा चक्रवर्ती गृह विज्ञान महाविद्यालय

- उपरोक्त महाविद्यालय की ओर से सितंबर माह को राष्ट्रीय पोषण माह के रूप में मनाया गया। इस दौरान महाविद्यालय के खाद्य एवं पोषण विभाग द्वारा गांव बालसमंद व हिंदवान में व्याख्यानों और प्रतियोगिताओं के माध्यम से गांव वासियों विशेषकर महिलाओं को पोषण के महत्व के बारे में जागरूक किया गया। महाविद्यालय की अधिष्ठाता डॉ. बिमला ढांडा ने बताया कि यह कार्यक्रम राष्ट्रीय कृषि उच्चतर शिक्षा परियोजना के आईडीपी प्रोजेक्ट के तहत आयोजित किया गया।
- खाद्य एवं पोषण विभाग द्वारा राष्ट्रीय पोषण माह के तहत गांव बुड़ाक में भी प्रशिक्षण का आयोजन किया गया। इस प्रशिक्षण में ग्रामीण महिलाओं को बाजरे के मूल्य संवर्धित उत्पाद जैसे बाजरे के लड्डू, सेव, बिस्किट, केक आदि बनाना सिखाया गया। महिलाओं को स्वरोजगार स्थापित करने के लिए भी प्रेरित किया गया और लघु उद्योग स्थापित करने के विभिन्न आयामों से अवगत कराया गया। इस अवसर पर गांव के राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय में विद्यार्थियों के बीच पौष्टिक व्यंजन, नारा लेखन व पोस्टर बनाओ प्रतियोगिताओं का आयोजन भी कराया गया।
- महाविद्यालय के पारिवारिक संसाधन प्रबंधन विभाग की अंतिम वर्ष की छात्राओं द्वारा ग्रीन कंज्यूमर दिवस के उपलक्ष्य में साइकिलिंग प्रतियोगिता का आयोजन कराया गया। कार्यक्रम की संयोजिका विभागाध्यक्ष डॉ. मंजू मेहता व डॉ. किरण सिंह ने बताया कि इस प्रतियोगिता में देश व विदेश से 300 प्रतिभागियों ने पंजीकरण करवाया था। प्रतियोगिता में हरियाणा के अलावा बैंगलोर, हिमाचल प्रदेश व कनाडा से भी लोगों ने हिस्सा लिया। इस विभाग द्वारा एक ऑनलाइन कविता प्रतियोगिता का आयोजन भी किया गया।
- आजादी का अमृत महोत्सव के उपलक्ष्य में पारिवारिक संसाधन प्रबंधन विभाग से डॉ. किरण सिंह के नेतृत्व में अखिल भारतीय समन्वित अनुसंधान परियोजना के तहत गांव रावलवास खुर्द में पौधारोपण व पौध वितरण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय गंगवा व आंगनवाड़ी केन्द्र मंगाली में पौधारोपण किया गया।

संक्षिप्त समाचार

मानव संसाधन प्रबंधन निदेशालय

- मानव संसाधन प्रबंधन निदेशालय की कृषि अनुसंधान एवं शिक्षा प्रबंधन अकादमी ('आरम') द्वारा राष्ट्रीय कृषि विस्तार प्रबंधन संस्थान ('मेनेज') के सहयोग से 16 से 19 अगस्त तक विस्तार कार्यकत्ताओं की क्षमता विकास विषय पर प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस प्रशिक्षण में देश के विभिन्न कृषि विश्वविद्यालयों व भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद् के संस्थानों से कुल 33 प्रतिभागी शामिल हुए जिनमें से 19 प्रतिभागियों ने इस प्रशिक्षण को सफलतापूर्वक पूरा किया। प्रशिक्षण के समापन समारोह में कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज मुख्यातिथि थे। उन्होंने वैज्ञानिकों और विस्तार कार्यकत्ताओं की क्षमता विकास के महत्व पर विस्तार से चर्चा की। उन्होंने प्रतिभागियों से प्रशिक्षण में अर्जित ज्ञान का व्यवहारिक उपयोग करने का आह्वान किया।
- 'आरम' की ओर से 31 अगस्त से 4 सितंबर तक शिक्षकों व तकनीकी कर्मचारियों को लेखा परीक्षा प्रशिक्षण प्रदान किया गया। इसी प्रकार 6 से 10 सितंबर तक स्टेनो टाइपिस्ट और जूनियर स्केल स्टेनोग्राफर की पदोन्नति/एसीपी पे के लिए आशुलिपि टेस्ट हेतु प्रशिक्षण तथा 13 से 22 सितंबर तक बेसिक लेवल कम्प्यूटर एप्रिसिएशन कोर्स आयोजित किए गए।

छात्र कल्याण निदेशालय

- विश्वविद्यालय के छात्र कल्याण निदेशालय के अंतर्गत छात्र परामर्श एवं रोजगार इकाई की ओर से 2 अगस्त को मैनकाइंड फार्मा लि. के सहयोग से विश्वविद्यालय के विद्यार्थियों के मार्गदर्शन के लिए औषद उद्योग में अवसर विषय पर करियर कांउसलिंग सत्र का आयोजन किया गया।
- थर्ड हरियाणा बटालियन एनसीसी विंग की ओर से 'एक कैडेट-एक पेड़' अभियान के तहत कमांडिंग ऑफिसर कर्नल राजेश यादव के नेतृत्व में विश्वविद्यालय के कृषि महाविद्यालय के एनसीसी कैडेटस द्वारा विश्वविद्यालय के क्रिकेट मैदान के चारों ओर वृक्षारोपण किया गया। इस अवसर पर उपस्थित ए.एन.ओ. कैप्टन कृष्ण सहरावत, लेफ्टिनेंट कर्नल बी.आई.एस. सिंहमार, सुबेदार मेजर कृष्ण सिहाग सेना मेडल, सहायक यशवंत दलाल आदि ने भी पौधारोपण किया।

नेहरू पुस्तकालय

- हिंदी भाषा को उचित स्थान दिलाने के लिए हमें सामूहिक प्रयास करने होंगे। केवल हिंदी दिवस के आयोजन मात्र से इस कार्य में सफलता नहीं मिलेगी। ये विचार विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने व्यक्त किए। वे हिंदी दिवस के उपलक्ष्य में विश्वविद्यालय के नेहरू पुस्तकालय में आयोजित दो दिवसीय पुस्तक प्रदर्शनी में बोल रहे थे। उन्होंने कहा यह भाषा सरल होने के कारण संचार के लिए बहुत उपयुक्त है। इस भाषा में देशवासी अपनी भावनाओं, विचारों और संदेशों को खुलकर व्यक्त कर सकते हैं। पुस्तकालयाध्क्ष डॉ. बलवान सिंह ने बताया कि इस पुस्तक प्रदर्शनी में हिंदी भाषा में कृषि विज्ञान, भारतीय इतिहास एवं जीवनी, हिंदी संदर्भ ग्रंथ, भारतीय दर्शन, सामाजिक विज्ञान, धर्म आदि विषयों पर प्रकाशित पुस्तकें प्रदर्शित की गई ताकि लोगों को देश के प्राचीन इतिहास को हिंदी में जानने का मौका मिले और इनके प्रति लोगों की रूचि बढ़े।
- नेहरू पुस्तकालय द्वारा फैकल्टी व स्नातकोत्तर विद्यार्थियों के लिए ऑरिजनल ('अरकण्ड') एंटी प्लैजरिज़्म सॉफ्टवेयर विषय पर 28 सितंबर को ऑनलाइन प्रशिक्षण का आयोजन किया गया। अनुसंधान निदेशक डॉ. एस.के. सहरावत ने इस प्रशिक्षण का उद्घाटन किया और प्रतिभागियों से अपने अनुसंधानों की गुणवत्ता को महत्व देने के साथ एंटी प्लैजरिज़्म सॉफ्टवेयर के माध्यम से अनुसंधानों पर आधारित प्रकाशनों की गुणवत्ता बढ़ाने का आह्वान किया। पुस्तकालयाध्क्ष डॉ. बलवान सिंह ने कहा कि इस प्रशिक्षण का आयोजन केन्द्रीय मानव संसाधन विकास मंत्रालय की एक योजना के तहत किया गया है। मुख्य वक्ता इ-ग्लॉकटिक की प्रोडक्ट मैनेजर प्रीति राठी ने शोध में इस सॉफ्टवेयर को प्रयोग करने बारे विस्तार से प्रकाश डाला। प्रशिक्षण की संयोजिका डॉ. सीमा परमार के अनुसार इस प्रशिक्षण में कुल 343 शोधार्थी शामिल हुए।

सायना नेहवाल कृषि प्रौद्योगिकी प्रशिक्षण एवं शिक्षण संस्थान

- चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय से बेरोजगार युवक-युवतियां प्रशिक्षण हासिल कर स्वरोजगार स्थापित करें और दूसरे लोगों को भी इसके लिए प्रेरित करें। साथ ही उन्हें इस विश्वविद्यालय में कराए जाने वाले विभिन्न प्रशिक्षणों के बारे में भी अवगत कराएं ताकि वे भी यहां से जुड़कर अधिक से अधिक लाभ उठा सकें। ये बात विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने कही। वे विश्वविद्यालय के सायना नेहवाल कृषि प्रौद्योगिकी प्रशिक्षण एवं शिक्षण संस्थान में आयोजित प्रतिभागी सहायता सामग्री वितरण समारोह के दौरान बतौर मुख्यातिथि बोल रहे थे। कार्यक्रम का आयोजन अनुसूचित जाति व जनजाति के उम्मीदवारों की आजीविका उत्थान योजना के तहत किया गया था। मुख्यातिथि ने कहा कि ग्रामीण वंचित वर्ग के लिए इस तरह के प्रशिक्षण बहुत जरूरी हैं। यहां से नि:शुल्क प्रशिक्षण हासिल कर उम्मीदवार समाज व राष्ट्र निर्माण में अपनी अहम भूमिका निभा सकता है। विस्तार शिक्षा निदेशक डॉ. रामनिवास ने बताया कि इस संस्थान द्वारा विभिन्न प्रकार के रोजगारोन्मुखी प्रशिक्षण प्रदान किए जाते हैं जो नि:शुल्क हैं। इस अवसर पर संस्थान के सह-निदेशक डॉ. अशोक गोदारा मौजूद रहे।
- उपरोक्त संस्थान की ओर से किसानों और ग्रामीण बेरोजगार नवयुवकों एवं नवयुवतियों के लिए केंचूआ खाद उत्पादन तकनीक, डेयरी फर्मिंग, मौसमी सब्जियों की खेती, बाग लगाना, खुम्ब उत्पादन तकनीक और खरीफ फसलों में एकीकृत रोग व कीट प्रबंधन विषयों पर भी प्रशिक्षण आयोजित किए गए।

मीडिया एडवाइज़र
चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार- 125 004
दूरभाष : 01662-284330, 289307
ई-मेल : mediaadvisorhau@gmail.com / prohaunews@gmail.com

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय
हिसार- 125 004 (हरियाणा), भारत
(1970 की संसदीय अधिनियम संख्या 16 द्वारा संस्थापित)
दूरभाष : 01662-237720-21, 289502-10
वेबसाईट : www.hau.ac.in

Published by Media Advisor on behalf of CCS Haryana Agricultural University, Hisar. Printed at : Dorex Offset, Hisar Mob. 98960-11117

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय

न्यूज़लेटर

राज्यपाल श्री बंडारू दत्तात्रेय ने किया विश्वविद्यालय का दौरा
महिलाओं, बेरोजगार युवकों, किसानों के लिए किए जा रहे कार्यों को सराहा

हरियाणा के राज्यपाल एवं चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय हिसार के कुलाधिपति माननीय श्री बंडारू दत्तात्रेय जी ने 5 अक्तूबर को विश्वविद्यालय का दौरा किया और यहां चल रहे शोध व शिक्षण कार्यों का जायजा लिया। उन्होंने विश्वविद्यालय द्वारा ग्रामीण महिलाओं, बेरोजगार युवाओं और किसानों के कल्याण के लिए किए जा रहे कार्यों में विशेष रूचि दिखाई। दौरे के दौरान माननीय राज्यपाल जी ने कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज के साथ आणविक जीव विज्ञान, जैव प्रौद्योगिकी और जैव सूचना विभाग की लैब और फंक्शनल जीनोमिक्स एंड मॉलेक्यूलर ब्रीडिंग लैब गए और जानकारी प्राप्त की। कुलपति ने राज्यपाल जी को बताया कि यहां किसानों के लिए टिश्यू कल्चर तकनीक से जिन पौधों में बीज नहीं बनता या फिर बहुत कम बनता है, उन पौधों के छोटे से भाग से रोग रहित हजारों पौधे तैयार किए जा सकते हैं। अभी तक गन्ना, केला व औषधीय पौधों के करीब पांच लाख पौधे किसानों को मुहैया करवाए जा चुके हैं।

महिलाओं व स्टार्टअप्स के लिए किए जा रहे प्रयासों की सराहना की

इस दौरान राज्यपाल जी ने एग्री बिजनेस इन्क्यूबेशन सेंटर (एबिक) से जुड़कर अपना व्यवसाय शुरू करने वाले स्टार्टअप्स से मुलाकात की और उनके द्वारा लगाई गई हाइड्रोपोनिक तकनीक, वैल्यू एडीशन, टेरेस गार्डनिंग के लिए गमले, पीपीपी मोड पर बायोफर्टिलाइजर लैब, सब्जी विज्ञान विभाग की ओर से रूट ग्राफटिंग तकनीक, मौसम विज्ञान विभाग की ई-मौसम सेवा, गृह विज्ञान महाविद्यालय की ओर से खेती-बाड़ी के लिए प्रयोग किए जाने वाले विभिन्न प्रकार के सहायक वस्त्रों व बाजरे के बिस्कुट और इंजीनियरिंग कालेज की ओर से आधुनिक कृषि यंत्रों की प्रदर्शनी का अवलोकन किया। उन्हे गेहूं की हाल ही में विकसित की गई अधिक पैदावार देने वाली किस्म डब्ल्यूएच 1270, तिलहनों व दलहनों की उन्नत किस्मों की भी जानकारी दी गई। उन्होंने किसानों, महिलाओं और स्टार्टअप्स के लिए विश्वविद्यालय द्वारा किए जा रहे प्रयासों की प्रशंसा की और कहा यह प्रयास कृषि पैदावार बढ़ाने के साथ स्वरोजगार के लिए बहुत कारगर सिद्ध होंगे।

शेष पृष्ठ 2 पर

अंतर्वस्तु

एग्री बिजनेस इंक्यूबेशन सेंटर को मिला राष्ट्रीय स्तर पर अवार्ड	2
मुख्यमंत्री ने किया कृषि महाविद्यालय, बावल में छात्रावास का उद्घाटन	3
विश्वविद्यालय व निजी क्षेत्र की कंपनी के बीच हुआ समझौता	3
डिस्टिलरी की फ्लाई ऐश व स्पेंट वाश से बनेगा फास्फेटिक फर्टिलाइजर	4
महिला सशक्तिकरण विषय पर संगोष्ठी; न्यायमूर्ति सूर्यकांत ने किया उद्घाटन	5
विश्वविद्यालय ने अटल रैंकिंग में देशभर के कृषि विश्वविद्यालयों में लगातार दूसरी बार पाया प्रथम स्थान	6
विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों ने पहली बार खोजी बाजरे की नई बीमारी	7
कृषि अधिकारी कार्यशाला (रबी) में नई समग्र सिफारिशों के लिए हुआ मंथन	9
बाजरे की एचएचबी 67 उन्नत-2 संकर किस्म विकसित	10
मानव शृंखला बनाकर एड्स के प्रति किया गया जागरूक	11
विश्वविद्यालय के वनस्पति उद्यान में गुलदाउदी पुष्प प्रदर्शनी आयोजित	12
संगोष्ठी/कार्यशाला/प्रशिक्षण में सहभागिता	13
संक्षिप्त समाचार	14-15
क्षेत्रीय अनुसंधान केन्द्र समाचार	15

संरक्षक

प्रो. बी.आर. काम्बोज
कुलपति

संपादक

डॉ. संदीप आर्य
मीडिया सलाहकार

मुख्य संपादक

अनुसंधान निदेशक

University Publication No.
CCSHAU/PUB#18-0026-2021-11-4

एग्री बिजनेस इंक्यूबेशन सेंटर को मिला राष्ट्रीय स्तर पर अवार्ड

विश्वविद्यालय के एग्री बिजनेस इंक्यूबेशन सेंटर (एबिक) को राष्ट्रीय स्तर पर बेस्ट इंक्यूबेशन सेंटर का अवार्ड मिला है। यह अवार्ड खाद्य प्रसंस्करण उद्योग मंत्रालय, भारत सरकार के राज्य मंत्री श्री प्रहलाद सिंह पटेल ने नई दिल्ली में एग्री फूड-इम्पावरिंग इंडिया अवार्ड-2021 के लिए आयोजित एक समारोह में विश्वविद्यालय के कुलपति एवं एबिक के चेयरमैन प्रो. बी.आर. काम्बोज को प्रदान किया। इसके तहत कुलपति व उनकी टीम को ट्रॉफी देकर सम्मानित किया गया। एबिक ने यह उपलब्धि अपनी स्थापना के मात्र दो वर्ष की अवधि के दौरान हासिल की है।

अवार्ड एबिक के लिए प्रेरणा : कुलपति

कुलपति के अनुसार एग्री फूड-इम्पावरिंग इंडिया अवार्ड-2021 के तहत एग्री बिजनेस इंक्युबेशन सेंटर को चुना जाना एक प्रेरणा के रूप में काम करेगा। इस अवार्ड ने साबित कर दिया है कि एबिक अपने उद्देश्य की प्राप्ति के लिए सही दिशा में काम कर रहा है। इस विश्वविद्यालय में नाबार्ड व राष्ट्रीय कृषि विकास योजना (आरकेवीवाई) के तहत एग्री बिजनेस इंक्यूबेशन सेंटर (एबिक) की स्थापना का मुख्य उद्देश्य बेरोजगार युवाओं, विद्यार्थियों, किसानों और कृषि उद्यमियों को न केवल सक्षम बनाना है बल्कि स्वयं का रोजगार स्थापित करते हुए दूसरों को भी रोजगार के अवसर मुहैया करवाना है। यहां से जुड़कर स्टार्ट अप्स स्वयं का रोजगार स्थापित कर दूसरों को भी रोजगार मुहैया करवा रहे हैं। विश्वविद्यालय में स्थित यह केन्द्र न केवल चयनित स्टार्ट अप्स को तकनीकी सहायता प्रदान करता है बल्कि जरूरत के अनुसार उन्हें आर्थिक सहायता भी प्रदान करता है। एबिक युवा व किसानों को उनके उत्पादों की प्रोसेसिंग, मूल्य संवर्धन, पैकेजिंग, सर्विसिंग व ब्राडिंग जैसे महत्वपूर्ण कार्यों के लिए सहायता प्रदान करता है ताकि वे अपने व्यवसाय को अच्छे से स्थापित कर सकें। उन्होंने इस उपलब्धि के लिए एबिक के नोडल अधिकारी व उनकी टीम सहित विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों एवं कर्मचारियों को बधाई दी।

अब तक 62 स्टार्टअप्स दूसरों को भी मुहैया करवा रहे हैं रोजगार

कृषि और संबंधित क्षेत्रों में किसान को खुद का व्यवसाय खड़ा करने के लिए कंपनी बनाना, लाइसेंस लेना व उनके नवाचार को पेटेंट करवाने व उत्पाद को मार्केट में बेचने में मदद करने के लिए वर्ष 2019 में इसकी स्थापना की गई थी। एबिक के माध्यम से 101 स्टार्ट अप्स का चयन करते हुए उन्हें 2 माह का तकनीकी प्रशिक्षण दिया गया है। अब तक 62 स्टार्ट अप्स ने न केवल अपनी आय अर्जित करनी शुरू की है अपितु दूसरों को भी रोजगार प्रदान किया है। इस साल भी स्टार्ट अप्स के लिए 210 आवेदन प्राप्त हो चुके हैं जिनको चयन प्रक्रिया से गुजरने के बाद तकनीकी एवं आर्थिक सहायता प्रदान की जाएगी।

....पृष्ठ 1 से आगे

कार्यालय परिसर एवं प्रयोगशाला की रखी आधारशिला

माननीय राज्यपाल जी ने इस दौरान विश्वविद्यालय के दीन दयाल उपाध्याय जैविक खेती उत्कृष्टता केंद्र में कार्यालय परिसर एवं प्रयोगशाला के भवन की आधारशिला भी रखी। उन्होंने विश्वविद्यालय की ओर से प्रदेश में जैविक खेती को बढ़ावा देने के लिए स्थापित किए गए इस केंद्र की सराहना की। उन्होंने कहा कि यहां से जुड़कर किसान जैविक खेती को बढ़ावा देते हुए रसायनमुक्त उत्पाद तैयार कर सकेंगे। वर्तमान समय में न केवल राष्ट्रीय बल्कि अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर जैविक उत्पादों की मांग बढ़ रही है। इससे किसानों को विदेशी मुद्रा हासिल हो सकेगी और वे आर्थिक रूप से और अधिक समृद्ध हो सकेंगे। उन्होंने कहा कि यह लैब किसानों के लिए बहुत फायदेमंद साबित होगी। इस लैब के माध्यम से किसानों को भूमि का स्वास्थ्य जांचने, जैविक कीटनाशक व फफूंदनाशक बनाने, फसलों की गुणवत्ता जांचने व मूल्य संवर्धन में काफी मदद मिलेगी। उन्होंने दीन दयाल जैविक खेती उत्कृष्टता केंद्र का भ्रमण कर यहां चल रही विभिन्न अनुसंधानात्मक गतिविधियों का अवलोकन किया। इसके उपरांत उन्होंने परिसर में फलदार पौधा रोपित किया।

मुख्यमंत्री ने किया कृषि महाविद्यालय, बावल में छात्रावास का उद्घाटन

माननीय मुख्यमंत्री श्री मनोहर लाल जी ने 26 नवम्बर को विश्वविद्यालय के कृषि महाविद्यालय, बावल में नवनिर्मित छात्रावास भवन का उद्घाटन किया। करीब 3.30 करोड़ रूपये की लागत से बनाए गए इस छात्रावास में 150 छात्रों के ठहरने की व्यवस्था है। कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने इस शुभ कार्य के लिए माननीय मुख्यमंत्री जी का आभार व्यक्त किया।

इस अवसर पर केन्द्रीय सांख्यिकी और कार्यक्रम कार्यान्वयन मंत्री (स्वतन्त्र भार) श्री राव इन्द्रजीत सिंह, कृषि एवं किसान कल्याण मंत्री श्री जय प्रकाश दलाल, सहकारिता व अनुसूचित जाति-पिछड़ा वर्ग मंत्री डॉ. बनवारी लाल और भारतीय जनता पार्टी के प्रांत अध्यक्ष श्री ओम प्रकाश धनकड़ सहित कृषि महाविद्यालय, बावल के प्रिंसिपल डॉ. नरेश कौशिक, शिक्षक व गैर शिक्षक कर्मचारी भी उपस्थित रहे।

आधुनिक सुविधाओं से सुसज्जित इस छात्रावास में डाइनिंग रूम, कॉमन रूम, जिम, इनडोर गेम रूम व कैन्टीन सहित शारीरिक रूप से अक्षम छात्रों के लिए अलग से विशेष सुविधाएं युक्त कमरों की व्यवस्था है। उल्लेखनीय है कि इस छात्रावास की आधाशिला भी मुख्यमंत्री जी के कर-कमलों द्वारा रखी गई थी।

विश्वविद्यालय व निजी क्षेत्र की कंपनी के बीच हुआ समझौता

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय किसानों के लिए विभिन्न फसलों की उन्नत किस्में विकसित करने व कृषि की नवीन प्रौद्योगिकी अधिक से अधिक किसानों तक पहुंचाने के लिए लगातार प्रयासरत है। इसी कड़ी में विश्वविद्यालय ने कृषि में आधुनिक तकनीकों को किसानों तक पहुंचाने व उनके प्रयोग के लिए अंतर्राष्ट्रीय कंपनी धानुका एग्रीटेक लिमिटेड के साथ समझौता किया है।

समझौता ज्ञापन के अनुसार उपरोक्त कंपनी व विश्वविद्यालय संयुक्त रूप से विद्यार्थियों व किसानों को कृषि की व्यावसायिक व उन्नत तकनीकों के बारे में प्रशिक्षण देंगे और इस दौरान होने वाले व्यय में कंपनी आर्थिक सहायता प्रदान करेगी। इसके अलावा विस्तार गतिविधियों के अंतर्गत किसानों के लिए जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किए जाएंगे जिनमें विश्वविद्यालय के वैज्ञानिक व कंपनी के विशेषज्ञ शामिल होंगे। इससे किसानों को फसलों का उत्पादन बढ़ाने में मदद मिलेगी। उपरोक्त कंपनी विश्वविद्यालय के द्वारा आयोजित किए जाने वाले सेमिनार व सम्मेलनों में भी हिस्सा लेगी और सहयोग करेगी। इसके अतिरिक्त कंपनी विश्वविद्यालय के छह विद्यार्थियों को मेरिट के आधार पर छात्रवृति प्रदान करेगी जिनमें तीन स्नातकोत्तर व तीन पीएचडी के विद्यार्थी शामिल होंगे।

ड्रोन तकनीक के प्रयोग पर भी रहेगा जोर

हाल ही में केंद्र सरकार की ओर से ड्रोन तकनीक को बढ़ावा देने के लिए तैयार की गई योजना के तहत कृषि में इसके प्रयोग की अधिक से अधिक जानकारी दी जाएगी। साथ ही फसलों में रसायनों के प्रयोग के लिए ड्रोन तकनीक को बेहतर तरीके से प्रयोग करने और जल संरक्षण व खेती की लागत कम करने के लिए अनुसंधान भी किए जाएंगे। बता दें कि धानुका के आर एण्ड डी डिवीजन में विश्व स्तरीय एन ए बी एल मन्यता प्रप्त प्रयोगशालाएं हैं।

कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज की उपस्थिति में विश्वविद्यालय की ओर से अनुसंधान निदेशक डॉ. एस.के. सहरावत व मानव संसाधन प्रबंधन निदेशक डॉ. एम.एस. सिद्धपुरिया ने जबकि कंपनी की ओर से डॉ. अजीत सिंह तोमर, उपाध्यक्ष (अनुसंधान एवं विकास) व डॉ. डी.वी. सिंह ने इस समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए।

डिस्टिलरी की फ्लाई ऐश व स्पेंट वाश से बनेगा फास्फेटिक फर्टिलाइजर

विश्वविद्यालय 'वेस्ट टू वेल्थ' में बदलने की तकनीक को करेगा सार्थक

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय डिस्टिलरी से निकलने वाली फ्लाई ऐश व स्पेंट वाश से फास्फेटिक फर्टिलाइजर तैयार करने पर काम करेगा। इसके लिए विश्वविद्यालय ने अमेरिका में स्थित विश्व के एकमात्र उर्वरक शोध संस्थान इंटरनेशनल फर्टिलाइजर डेवलपमेंट सेंटर (आईएफडीसी) के साथ समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए हैं।

विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज की उपस्थिति में विश्वविद्यालय की ओर से अनुसंधान निदेशक डॉ. एस.के. सहरावत व मानव संसाधन प्रबंधन निदेशक डॉ. एम.एस. सिद्धपुरिया जबकि कंपनी की ओर से कंट्री निदेशक डॉ. यशपाल सहरावत व कंसल्टेंट डॉ. सांई दास ने हस्ताक्षर किए।

फ्लाई ऐश व स्पेंट वाश का निस्तारण है बड़ी समस्या : कुलपति

इस अवसर पर कुलपति ने कहा कि डिस्टिलरी से निकलने वाली फ्लाई ऐश व स्पेंट वाश का निस्तारण वर्तमान समय में एक बड़ी समस्या है, इनका फास्फेटिक फर्टिलाइजर बनाना 'वेस्ट टू वेल्थ' की सोच को सार्थक करने की दिशा में एक अहम कदम है। इस एमओयू के तहत आईएफडीसी के साथ विश्वविद्यालय संयुक्त रूप से वैज्ञानिकों, विद्यार्थियों और किसानों के लिए अनुसंधान, शिक्षा व प्रशिक्षण जैसे विभिन्न सहयोगात्मक कार्यक्रमों का संयोजन व आदान-प्रदान करेगा। उपरोक्त सेंटर के विशेषज्ञ व इस विश्वविद्यालय के वैज्ञानिक व विद्यार्थी मिलकर प्रशिक्षण कार्यक्रम भी आयोजित करेंगे और आईएफडीसी की ओर से तकनीक सीखने के लिए वित्तीय सहायता भी प्रदान की जाएगी।

सात हजार करोड़ रूपये के उर्वरक का हो सकता है उत्पादन: डॉ. सहरावत

आईएफडीसी के कंट्री हेड डॉ. यशपाल सहरावत के अनुसार इस नवीन तकनीक से हरियाणा राज्य लगभग 55 करोड़ रुपये और 27 करोड़ रुपये के क्रमश: पोटाश और फासफोरस उर्वरकों का उत्पादन कर सकता है जबकि भारत सालाना 7000 करोड़ रुपये मूल्य के उर्वरक का उत्पादन कर सकता है जिससे केंद्र सरकार का सब्सिडी बोझ सालाना 30 करोड़ रुपये से अधिक कम हो सकता है। इस परियोजना को स्थापित करने के लिए शुगरफेड हरियाणा प्रथम वर्ष चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, आईएफडीसी व कृषि एवं किसान कल्याण विभाग को साढ़े सात करोड़ रूपये की आर्थिक सहायता प्रदान करेगा।

राष्ट्रीय पोषण माह दौरान आयोजित किए कार्यक्रम

विश्वविद्यालय के इंदिरा चक्रवर्ती गृह विज्ञान महाविद्यालय के खाद्य एवं पोषण विभाग द्वारा गांव बुडाक में राष्ट्रीय पोषण माह का समापन समारोह आयोजित किया गया। समारोह में विश्वविद्यालय के कुलपति की धर्मपत्नी श्रीमती संतोष कुमारी मुख्यातिथि रही। उन्होंने गृह विज्ञान महाविद्यालय द्वारा किए जा रहे महिला सशक्तिकरण के कार्यों की सराहना की।

मुख्यातिथि ने कहा कि सरकार प्रत्येक नागरिक के भोजन की थाली में भरपूर पोषण के लिए घरों के साथ-साथ स्कूलों में गृह वाटिका के विकास को प्रोत्साहित कर रही है। गृह वाटिका हमें कम कीमत पर रसायन मुक्त पौष्टिक फल-सब्जियां प्रदान कर सकती है जो समाज में पोषण स्तर को बढ़ाने में सहायक होंगे। इस मौके पर मुख्यातिथि की अगुवानी में उक्त महाविद्यालय की वाटिका में विभिन्न सब्जियों के बीज और फलदार पौधे लगाए गए। इसके अलावा विभिन्न कार्यक्रमों के दौरान सिखाए गए कौशल व उससे संबंधित उत्पादों की एक प्रदर्शनी भी लगाई गई। विभिन्न प्रतियोगिताओं के विजेताओं को मुख्यातिथि द्वारा प्रमाण-पत्र और पुरस्कार प्रदान किए गए।

इस अवसर पर अनुसंधान निदेशक डॉ. एस. के. सहरावत व महाविद्यालय की अधिष्ठाता डॉ. बिमला ढांडा भी मौजूद रहे। खाद्य एवं पोषण विभाग की अध्यक्ष डॉ. सुनीता चहल सिंधु ने बताया कि विभाग द्वारा गांव बुडाक के साथ-साथ गांव हिंदवान और बालसमंद में भी पोषण माह का आयोजन किया गया।

महिला सशक्तिकरण विषय पर संगोष्ठी; न्यायमूर्ति सूर्यकांत ने किया उद्घाटन
महिला छात्रावास की भी रखी आधारशिला

भारत के सर्वोच्च न्यायालय के न्यायमूर्ति सूर्यकांत ने कहा कि किसी भी राष्ट्र के विकास के लिए लैंगिक समानता और महिला सशक्तिकरण बहुत जरूरी है। महिला सशक्तिकरण तभी संभव है जब महिलाओं को उचित अवसर उपलब्ध करवाए जाने के साथ संविधान में दिए गए समानता के अधिकार का सही से पालन हो। इसके लिए सरकार, न्यायपालिका और समाज की भी अहम भूमिका है। न्यायमूर्ति विश्वविद्यालय में महिला सशक्तिकरण विषय पर आयोजित कार्यक्रम में बतौर मुख्यातिथि बोल रहे थे। कार्यक्रम की अध्यक्षता विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी. आर. काम्बोज ने की। उन्होंने कहा सरकार का काम कानून बनाना है और न्यायपालिका का कार्य उनको ठीक तरीके से लागू करवाने का है जबकि समाज को भी इसके प्रति जागरूक होना जरूरी है। उन्होंने कहा महिला सशक्तिकरण के लिए शिक्षा बहुत जरूरी है। इसलिए हम सबका कर्तव्य बनता है कि हम लड़कियों को व्यावसायिक शिक्षा के लिए अवसर प्रदान करें और उन्हें ऐसे संस्थान में शिक्षा ग्रहण करने के लिए भेजें जहां से शिक्षा उपरांत वे स्वरोजगार भी स्थापित कर सकें। उन्होंने कहा एक समय था जब इस विश्वविद्यालय में छात्रों की संख्या अधिक हुआ करती थी, लेकिन ये बहुत ही हर्ष का विषय है कि आज इसमें छात्राओं की संख्या छात्रों से ज्यादा है। इससे साबित होता है कि महिला सशक्तिकरण के लिए यह विश्वविद्यालय बहुत अधिक प्रयासरत है।

हर क्षेत्र में हो महिलाओं की पहुंच : प्रो. बी.आर. काम्बोज

कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने मुख्यातिथि का स्वागत करते हुए कहा कि महिलाओं की हर क्षेत्र में पहुंच होनी चाहिए। इसके लिए उन्हें समान अवसर प्रदान करते हुए स्वरोजगार स्थापित करने के लिए मदद करनी चाहिए। यह विश्वविद्यालय इस दिशा में अहम भूमिका निभाते हुए महिलाओं के लिए विभिन्न प्रकार के प्रशिक्षण प्रदान कर उन्हें स्वरोजगार स्थापित करने के लिए प्रयासरत है। यहां से प्रशिक्षण हासिल कर महिलाएं अपना व्यवसाय स्थापित कर आगे बढ़ रही हैं।

न्यायमूर्ति ने महिला छात्रावास की रखी आधारशिला

न्यायमूर्ति सूर्यकांत ने विश्वविद्यालय में बनने वाले नए महिला छात्रावास की आधारशिला रखी। लगभग साढ़े 12 करोड़ रूपये की लागत से करीब 5190 वर्ग मीटर क्षेत्र में बनने वाले इस छात्रावास में कुल 177 छात्राओं के ठहरने की व्यवस्था होगी। इस छात्रावास में छात्राओं के लिए स्टडी रूम, टीवी रूम, जिम, इंडोर गेम्स, वार्डन हाऊस, विजिटर रूम, वेटिंग रूम सहित छात्राओं की सुविधा के लिए दो लिफ्ट भी लगाई जाएंगी। न्यायमूर्ति सूर्यकांत ने इस मौके पर परिसर में पौधारोपण किया। उन्होंने गृह विज्ञान महाविद्यालय द्वारा लगाई गई प्रदर्शनी का भी अवलोकन किया।

विश्वविद्यालय ने अटल रैंकिंग में देशभर के कृषि विश्वविद्यालयों में लगातार दूसरी बार पाया प्रथम स्थान

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय ने अटल रैंकिंग ऑफ इंस्टीट्यूशन्स ऑन इनोवेशन एंड एचीवमेंटस (ARIIA) में कृषि विश्वविद्यालयों में देशभर में प्रथम स्थान हासिल किया है। यह रैंकिंग 29 दिसम्बर, 2021 को भारत सरकार के शिक्षा मंत्रालय और अखिल भारतीय तकनीकी शिक्षा परिषद की ओर से जारी की गई थी।

ऑनलाइन माध्यम से आयोजित किए गए इस कार्यक्रम में भारत सरकार के शिक्षा राज्य मंत्री डॉ. सुभाष सरकार मुख्यातिथि जबकि अखिल भारतीय तकनीकी शिक्षा परिषद के चेयरमैन प्रो. अनिल डी. सहस्रबुद्धे विशिष्ट अतिथि थे। विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी. आर. काम्बोज ने इस उपलब्धि के लिए विश्वविद्यालय के शिक्षकों, गैर शिक्षक कर्मचारियों व विद्यार्थियों को बधाई दी और इसी प्रकार निरंतर मेहनत कर आगे बढ़ते रहने का आह्वान किया।

देशभर से 14 सौ से अधिक विश्वविद्यालयों और संस्थानों में मारी बाजी

अटल रैंकिंग योजना वर्ष 2018 में देशभर में शुरू की गई थी। वर्ष 2020 में भी विश्वविद्यालय ने प्रथम रैंकिंग हासिल की थी लेकिन उस समय केवल 674 शिक्षण संस्थानों ने ही आवेदन किया था। इस बार देशभर से 1438 विश्वविद्यालयों और संस्थानों सहित सभी आईआईटी, एनआईटी, आईआईएस आदि ने हिस्सा लिया, जिसमें कृषि विश्वविद्यालयों में इस विश्वविद्यालय ने लगातार दूसरी बार प्रथम रैंकिंग जबकि सरकारी व सरकारी सहायता प्राप्त विश्वविद्यालयों की श्रेणी में देशभर में चौथा स्थान हासिल किया है।

नित नई ऊंचाइयों को छू रहा है विश्वविद्यालय : कुलपति

विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने बताया कि यह विश्वविद्यालय निरंतर राज्य सरकार, केंद्र सरकार, भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद् व विश्वविद्यालय अनुदान आयोग की ओर से निर्धारित मापदंडों को पूरा करते हुए आगे बढ़ रहा है। विश्वविद्यालय में स्थापित एग्री बिजनेस इन्क्यूबेशन सेंटर 'एबिक' उत्तर भारत का पहला और देश का दूसरा केंद्र है जो इनोवेशन, स्टार्टअप्स व उद्यमिता को बढ़ावा दे रहा है। इस सेंटर को हाल ही में देशभर में सर्वश्रेष्ठ इंक्यूबेशन सेंटर अवार्ड भी प्रदान किया गया है। यह विश्वविद्यालय भारत में कृषि अनुसंधान में अग्रणी है। इस विश्वविद्यालय ने शिक्षा, अनुसंधान और विस्तार क्षेत्रों में अहम भूमिका निभाते हुए देश के 50,000 से अधिक और विकासशील देशों के 6,000 से अधिक छात्र यहां से शिक्षा ग्रहण कर चुके हैं जो विभिन्न क्षेत्रों में महत्वपूर्ण योगदान देते हुए राष्ट्रीय व अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर विश्वविद्यालय की प्रतिष्ठा बढ़ा रहे हैं।

पूर्व प्रधानमंत्री स्वर्गीय चौधरी चरण सिंह की जयंती मनाई

देश के पूर्व प्रधानमंत्री चौधरी चरण सिंह जी को उनकी 119वीं जयंती के अवसर पर श्रद्धासुमन अर्पित किए गए। कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज की अध्यक्षता में आयोजित किए गए कार्यक्रम में उनकी प्रतिमा पर पुष्प अर्पित करके उनके कार्यों को याद किया गया। इस अवसर पर कुलपति ने कहा कि चौधरी चरण सिंह जी जीवन पर्यन्त किसानों व कमेरा वर्ग के उत्थान के लिए प्रयासरत रहे। किसानों के लिए उनके अतुलनीय योगदान के कारण ही हर साल 23 दिसंबर को उनकी जयंती को राष्ट्रीय किसान दिवस के रूप में मनाया जाता है। उन्होंने कहा चौधरी चरण सिंह का मानना था कि किसान जब खेत में मेहनत करके अनाज पैदा करते हैं तभी वह हमारी थालियों तक पहुंच पाता है। ऐसे में किसानों का सम्मान करना बेहद जरूरी है।

स्वयं किसान परिवार व ग्रामीण परिवेश से थे पूर्व प्रधानमंत्री

प्रो. काम्बोज ने कहा कि चौधरी चरण सिंह एक किसान परिवार व ग्रामीण परिवेश से थे इसलिए वे किसानों की समस्याओं को अच्छी तरह से समझते थे। राजनेता होने के साथ ही पूर्व प्रधानमंत्री एक अच्छे लेखक व अर्थशास्त्री भी थे। उन्होंने उत्तर प्रदेश का मुख्यमंत्री, केन्द्रीय मंत्री और प्रधानमंत्री पदों पर रहते हुए देश में किसानों के जीवन और परिस्थितियों को बेहतर बनाने के लिए अनेक नीतियां बनाई। कार्यक्रम के दौरान कुलसचिव डॉ. एस.के. महता, कुलपति के ओएसडी डॉ. अतुल ढींगड़ा के अलावा विश्वविद्यालय के सभी महाविद्यालयों के अधिष्ठाताओं, निदेशकों, विभागाध्यक्षों, अधिकारियों के अलावा शिक्षक व गैर शिक्षक कर्मचारी संघ के प्रधान मौजूद रहे।

विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों ने पहली बार खोजी बाजरे की नई बीमारी अमेरिकन फाइटोपैथोलॉजिकल सोसाइटी ने दी बीमारी को मान्यता

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों ने बाजरे की नई बीमारी स्टेम रोट व इसके कारक जीवाणु *क्लेबसिएला एरोजेन्स* की खोज की है। पौधों में नई बीमारी को मान्यता देने वाली अमेरिकन फाइटोपैथोलॉजिकल सोसाइटी (ए.पी.एस) द्वारा प्रकाशित प्रतिष्ठित जर्नल प्लांट डिजीज में इस नई बीमारी की रिपोर्ट को प्रथम शोध रिपोर्ट के रूप में स्वीकार कर मान्यता दी गई है।

बीमारी के उचित प्रबंधन का हो लक्ष्य : कुलपति

विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने वैज्ञानिकों की इस खोज के लिए बधाई देते हुए इसके उचित प्रबंधन के लिए भी इसी प्रकार निरंतर प्रयासरत रहने की अपील की है। उन्होंने कहा वैज्ञानिकों को जल्द से जल्द आनुवांशिक स्तर पर प्रतिरोध स्त्रोत को खोजने की कोशिश करनी चाहिए।

वर्ष 2018 में खरीफ फसल में दिखाई दिए थे लक्षण

यहां उल्लेखनीय है कि पहली बार खरीफ-2018 में बाजरे में नई तरह की बीमारी दिखाई दी जिस पर विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों ने तत्परता से काम किया और तीन साल की कठोर मेहनत के बाद इस बीमारी की खोज करने में सफलता हासिल की। वर्तमान समय में राज्य के सभी बाजरा उत्पादक जिलों जिनमें मुख्यत: हिसार, भिवानी और रेवाड़ी हैं, के खेतों में यह बीमारी 70 प्रतिशत तक देखने को मिली है।

इन वैज्ञानिकों का रहा अहम योगदान

इस बीमारी की खोज करने में विश्वविद्यालय के पौध रोग वैज्ञानिक डॉ. विनोद कुमार मलिक मुख्य शोधकर्ता रहे। अन्य वैज्ञानिकों डॉ. पूजा सांगवान, डॉ. मनजीत सिंह, डॉ. राकेश पूनिया, डॉ. देवव्रत यादव, डॉ. पम्मी कुमारी और डॉ. सुरेंद्र कुमार पाहुजा का भी उनके इस प्रोजेक्ट में विशेष योगदान रहा है।

ये हैं बीमारी के लक्षण

इस बीमारी के शुरूआती लक्षण पत्तियों पर लंबी धारियों के रूप में दिखाई देते हैं व जल्द ही इन धारियों की संख्या में वृद्धि होने लगती है। इसके पश्चात तने पर जलसिक्त घाव दिखाई देते हैं जो बाद में भूरे से काले हो जाते हैं। इस स्थिति तक गंभीर रूप से रोगग्रस्त पौधे मर जाते हैं। रुपात्मक, रोगजनक, जैव रासायनिक और आणविक स्तर पर जांच करने पर यह साबित हुआ है कि इस बीमारी का कारक जीवाणु *क्लेबसिएला एरोजेन्स* ही है। *क्लेबसिएला एरोजेन्स* जीवाणु मनुष्य की आंत में भी होता है जो किसी माध्यम से फसल में आया और फसल को नुकसान पहुंचाने लगा।

शिक्षण में आधुनिक तकनीकों विषय पर रिफ्रेशर कोर्स आयोजित

विश्वविद्यालय के मानव संसाधन प्रबंधन निदेशालय की कृषि अनुसंधान एवं शिक्षा प्रबंधन अकादमी की ओर से आयोजित किए गए तीन सप्ताह अवधि के रिफ्रेशर कोर्स में इस विश्वविद्यालय सहित पंजाब, राजस्थान, हैदराबाद व लुवास से 38 शिक्षकों, वैज्ञानिकों व विस्तार विशेषज्ञों ने भाग लिया। रिफ्रेशर कोर्स के समापन अवसर पर आयोजित कार्यक्रम में कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने बतौर मुख्यातिथि प्रतिभागियों को प्रमाण-पत्र वितरित किए।

कुलपति ने कार्यक्रम को संबोधित करते हुए कहा कि शिक्षकों को पारंपरिक शिक्षण कार्य और दृश्य-श्रवण की आधुनिक तकनीकों के बीच सामंजस्य स्थापित कर आगे बढ़ना चाहिए। एक शिक्षक ही अपने अनुभव व तकनीकों के प्रयोग से शिक्षा को विद्यार्थियों के लिए आसान बना सकता है।

उन्होंने कहा कोरोना महामारी के चलते बदले परिवेश में शिक्षण कार्य एक चुनौती बन गया था, लेकिन शिक्षकों ने आधुनिक तकनीकों का प्रयोग कर इसे विद्यार्थियों के लिए रूचिकर बना दिया। इससे न केवल विद्यार्थियों को इस संकट की घड़ी में फायदा हुआ बल्कि उनका शिक्षण कार्य भी निर्बाध गति से जारी रहा। उन्होंने प्रतिभागी शिक्षकों से आह्वान किया कि वे रिफ्रेशर कोर्स दौरान सीखी गई आधुनिक शिक्षण तकनीकों को अपने-अपने संस्थानों में प्रयोग करें और अन्य शिक्षकों को भी इसके लिए प्रेरित करें।

यह कोर्स शिक्षण में आधुनिक तकनीकों और पारंपरिक तकनीकों के सामंजस्य व उनके प्रयोग से शिक्षण कला को और अधिक बेहतर बनाने को लेकर आयोजित किया गया था।

कार्यक्रम में मानव संसाधन प्रबंधन निदेशक डॉ. एम.एस. सिद्धपुरिया ने निदेशालय की ओर से मानव संसाधन विकास के लिए कराए जाने वाले विभिन्न प्रशिक्षणों की विस्तार से जानकारी दी। कार्यक्रम को पाठ्यक्रम संयोजिका एवं संयुक्त निदेशक डॉ. मंजू महता और सहायक निदेशक डॉ. अंजू सहरावत ने भी संबोधित किया। इस अवसर पर प्रतिभागियों ने इस कोर्स दौरान अपने अनुभवों को मुख्यातिथि के साथ साझा किया और इस रिफ्रेशर कोर्स को उपयोगी बताते हुए भविष्य में प्रशिक्षणों का यह क्रम जारी रखने को कहा।

गुजरात के प्रगतिशील किसानों ने हासिल की जैविक एवं प्राकृतिक खेती की जानकारी

गुजरात के साबरकण्ठा से प्रगतिशील किसानों का एक दल चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के चार दिवसीय दौरे पर आया। "आत्मा" योजना के तहत यहां आए इस दल ने विश्वविद्यालय के सायना नेहवाल कृषि प्रशिक्षण व शिक्षा संस्थान और दीन दयाल उपाध्याय जैविक खेती उत्कृष्ठता केन्द्र में आधुनिक कृषि प्रौद्योगिकी के साथ-साथ जैविक खेती, जीरो बजट प्राकृतिक खेती और फसल विविधिकरण का व्यावहारिक ज्ञान प्राप्त किया। इस दौरे के दौरान इन प्रगतिशील किसानों ने कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज से भेंट की तथा हरियाणा प्रदेश के किसानों की आर्थिक समृद्धि के लिए इस विश्वविद्यालय के शोध व विस्तार कार्यों की प्रशंसा की।

इस मौके पर कुलपति ने कहा कि जैविक व जीरो बजट प्राकृतिक खेती समय की मांग है जिसके लिए विश्वविद्यालय का दीन दयाल उपाध्याय जैविक खेती उत्कृष्टता केन्द्र किसानों को जागरूक करने में निरंतर प्रयत्नशील है। उन्होंने कहा किसानों के लिए इस तरह के जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किए जा रहे हैं जिनसे अधिक से अधिक किसानों को जैविक खेती, जीरो बजट प्राकृतिक खेती, फसल विविधिकरण, कृषि एवं उसके सहायक व्यवसाय अपनाकर वे अपनी आमदनी को बढ़ा रहे हैं। उन्होंने प्रगतिशील किसानों से आह्वान किया कि वे यहां हासिल किए ज्ञान को व्यावहारिक रूप में अपनाएं और 'आत्मा' स्कीम के प्रभारी किरण पटेल ने विश्वविद्यालय द्वारा प्रदान किए जा रहे प्रशिक्षणों और महत्वपूर्ण जानकारियां उपलब्ध करवाने के लिए कुलपति व अधिकारियों का धन्यवाद किया।

यहां उल्लेखनीय है कि गुजरात के इन प्रगतिशील किसानों ने 137 एकड़ में फैले दीनदयाल उपाध्याय जैविक खेती उत्कृष्ठता केन्द्र में विशेष रूचि लेते हुए केला, अमरूद, सब्जियों व अन्य फसलों की जैविक खेती के विभिन्न चरणों के जैविक परिवर्तनों, जैविक कृषि प्रबंधन, इसके प्रमाणीकरण की प्रक्रिया आदि की गहनता से जानकारी प्राप्त की। इन किसानों को समन्वित कृषि प्रणाली इकाई व बागवानी फार्म का भी भ्रमण कराया गया।

विश्वविद्यालय में राष्ट्रीय एकता शिविर आयोजित 15 राज्यों के विद्यार्थी हुए शामिल

विश्वविद्यालय में राष्ट्रीय सेवा योजना के तहत आयोजित किए गए सात दिवसीय राष्ट्रीय एकता शिविर में देश के 15 राज्यों जिनमें कर्नाटक, बिहार, झारखंड, महाराष्ट्र, पंजाब, असम, नागालैंड, राजस्थान, दिल्ली, जम्मू-कश्मीर, मणिपुर, गुजरात, हिमाचल प्रदेश, चंडीगढ़ सहित हरियाणा के दस विश्वविद्यालयों से स्वयंसेवकों ने भाग लिया। विभिन्न राज्यों के 10 कार्यक्रम अधिकारी भी शिविर में उपस्थित हुए।

शिविर के समापन समारोह में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के प्रांत प्रचारक श्री विजय मुख्यातिथि थे जबकि अध्यक्षता कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने की। मुख्यातिथि ने स्वयंसेवकों को संबोधित करते हुए कहा कि देश की उन्नति के लिए किया गया कार्य सच्ची देशभक्ति है। इसलिए व्यक्ति को व्यक्तिगत स्वार्थ से ऊपर उठकर समाज व राष्ट्र के विकास के लिए कार्य करना चाहिए। इसके लिए देश की एकता व अखण्डता को मजबूत करना बहुत जरूरी है। हमें क्षेत्रवाद को खत्म करते हुए क्षेत्रीय भावनाओं का सम्मान करना होगा और आपस में मिलकर देश को आगे बढ़ाने को लेकर कार्य करना होगा। उन्होंने उम्मीद जताई कि देश के कोने-कोने से इस शिविर में आए स्वयंसेवक इस राष्ट्रीय एकता शिविर के थीम "आत्मनिर्भर भारत" को मजबूत करने की दिशा में काम करेंगे।

स्वयंसेवक जन-जन तक पहुंचाएं समाजसेवा की भावना: प्रो. काम्बोज

कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने कहा कि हमें श्रेष्ठ व आत्मनिर्भर भारत के संकल्प को धारण करने की दिशा में व्यवहारिक रूप से काम करना चाहिए। उन्होंने कहा हम भाषा, रूप, वेशभूषा, रहन-सहन आदि में अलग-अलग हो सकते हैं लेकिन सबसे पहले हम भारतीय हैं।

शेष पष्ठ 13 पर

कृषि अधिकारी कार्यशाला (रबी) में नई समग्र सिफारिशों के लिए हुआ मंथन

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में दो दिवसीय कृषि अधिकारी कार्यशाला (रबी) इस आह्वान के साथ आरम्भ हुई कि कृषि विशेषज्ञों को फसलों की पैदावार बढ़ाने के साथ पर्यावरण संरक्षण के लिए भी प्रयास करने चाहिए। कार्यशाला का उद्घाटन कुलपति प्रो. बी. आर. काम्बोज ने किया। उन्होंने कहा कृषि उत्पादन बढ़ाने के प्रयासों में रसायनों के अंधाधुंध प्रयोग व जल दोहन से प्राकृतिक संसाधन नष्ट हो रहे हैं। भूमि की उर्वरा शक्ति भी घट रही है जोकि खाद्य सुरक्षा के लिए गंभीर चुनौती पैदा कर रही है।

उन्होंने कहा वैज्ञानिकों का दायित्व बनता है कि वे किसानों को इस बारे जागरूक करें। उन्होंने किसानों से फसल विविधिकरण को बढ़ावा देने की अपील की ताकि उनकी आमदनी में वृद्धि के साथ प्राकृतिक संसाधनों के ह्रास को कम किया जा सके। उन्होंने कहा परम्परागत खेती से लागत अधिक व आमदनी कम होती है। इसलिए फसल चक्र में बदलाव व विविधिकरण बहुत जरूरी है। कार्यक्रम में हरियाणा सरकार के कृषि एवं किसान कल्याण विभाग की अतिरिक्त मुख्य सचिव डॉ. सुमिता मिश्रा एवं कृषि महानिदेशक डॉ. हरदीप सिंह बतौर विशिष्ट अतिथि ऑनलाइन जुड़े ।

विश्वविद्यालय की सिफारिशें बहुत ही कारगर, किसान अपनाएं: डॉ. सुमिता मिश्रा

डॉ. सुमिता मिश्रा ने कहा कि किसानों की आमदनी बढ़ाने के लिए प्रदेश सरकार निरंतर प्रयासरत है। ऐसे में वैज्ञानिकों व कृषि अधिकारियों का भी फर्ज बनता है कि वे किसानों को परम्परागत खेती की बजाय फसल विविधिकरण के साथ-साथ आधुनिक खेती के तौर तरीकों, मृदा जांच आदि की जानकारी दें। उन्होंने राज्य सरकार की ओर से किसानों के हित के लिए चलाई जा रही विभिन्न कल्याणकारी योजनाओं के बारे में भी विस्तारपूर्वक जानकारी दी।

कृषि साहित्य हिन्दी में हो उपलब्ध

कृषि महानिदेशक डॉ. हरदीप सिंह ने विश्वविद्यालय की समग्र सिफारिशों व अन्य कृषि साहित्य हिंदी में उपलब्ध करवाएं जाने पर जोर दिया। उन्होंने कहा किसानों को विश्वविद्यालय के साथ जुड़कर वैज्ञानिकों द्वारा विकसित की गई तकनीकों और विभिन्न फसलों की उन्नत किस्मों का लाभ उठाना चाहिए। कार्यक्रम में कृषि विभाग के अतिरिक्त आयुक्त (गन्ना) डॉ. जगदीप बराड़, कृषि विभाग के अतिरिक्त निदेशक (सांख्यिकी) डॉ. आर.एस. सोलंकी व डॉ. रोहताश भी उपस्थित रहे।

विश्वविद्यालय के विस्तार शिक्षा निदेशक डॉ. रामनिवास ने कार्यशाला बारे विस्तृत जानकारी देते हुए निदेशालय द्वारा आयोजित की जाने वाली विभिन्न गतिविधियों जबकि अनुसंधान निदेशक डॉ. एस.के. सहरावत ने विश्वविद्यालय में चल रही अनुसंधान परियोजनाओं के बारे में विस्तारपूर्वक बताया। विस्तार शिक्षा निदेशालय के सह-निदेशक (किसान परामर्श केन्द्र) डॉ. सुनील ढांडा ने मंच का संचालन किया। इस कार्यक्रम दौरान गत वर्ष विभिन्न रबी फसलों में आई समस्याओं पर विचार-विमर्श करके उनके निदान के लिए सुझाव दिए गए।

भू लवणता आज विश्व स्तर पर एक गंभीर समस्या: प्रो. बी.आर. काम्बोज

भू लवणता आज हरियाणा की ही नहीं बल्कि विश्व स्तर पर एक गंभीर समस्या है। कम वर्षा, खारे जल का सिंचाई में प्रयोग, जल स्तर का ऊपर आना और उर्वरकों का अंधाधुंध प्रयोग भू लवणता बढ़ने के मुख्य कारण हैं। समय की मांग है कि इन लवणीय भूमियों को सुधारा जाए जो मृदा वैज्ञानिकों के प्रयासों से संभव हो सकता है। यदि हमारी मृदा स्वस्थ रहेगी, तो ही हम स्वस्थ रहेंगे।

ये विचार विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने विश्वविद्यालय के मृदा विज्ञान विभाग की ओर से विश्व मृदा दिवस पर आयोजित एक कार्यक्रम में बतौर मुख्यातिथि व्यक्त किए। कुलपति ने कहा कि मनुष्य के स्वस्थ रहने के लिए मृदा का स्वस्थ होना बहुत जरूरी है लेकिन उद्योगों द्वारा पर्यावरण मानकों के प्रति लापरवाही और कृषि भूमि के कुप्रबंधन से मृदा की स्थिति निरन्तर खराब हो रही है। उन्होंने कहा इस साल विश्व मृदा दिवस का विषय "मृदा लवणीकरण को रोकें, मृदा उत्पादकता को बढ़ावा दें" है। इसलिए किसानों को मृदा उत्पादकता को बनाए रखने के लिए समय-समय पर अपने खेत की मिट्टी की जांच अवश्य करवानी चाहिए और जांच रिर्पोट के आधार पर उर्वरकों व देसी खादों को प्रयोग करना चाहिए। इससे हम आने वाली पीढ़ियों को स्वस्थ मृदा दे सकेंगे।

इससे पूर्व मृदा विज्ञान विभाग के अध्यक्ष डॉ. मनोज शर्मा ने विश्व मृदा दिवस के बारे में विस्तार से बताया। मंच का संचालन डॉ. सुरेन्द्र कुमार शर्मा ने किया। उन्होंने कहा मिट्टी के महत्व बारे लोगों और किसानों को अवगत कराने के लिए हर साल 5 दिसंबर को यह दिवस मनाया जाता है। डॉ. रोहताश ने सूक्ष्म पोषक तत्वों के महत्व व प्रबंधन पर प्रकाश डाला। डॉ. राम प्रकाश ने मृदा लवणता के कारण व इसके प्रबंधन के बारे में विस्तार से किसानों को जानकारी दी। डॉ. पूजा जांगड़ा ने मिट्टी व पानी की जांच के महत्व के साथ-साथ मिट्टी व पानी के नमूने लेने की सही जानकारी दी। वहीं डॉ. देव राज व डॉ. कृष्ण भारद्वाज ने मृदा में समन्वित पोषक तत्व प्रबंधन के बारे में बताया।

इस मौके पर मेजबान विभाग द्वारा एक वाद विवाद प्रतियोगिता आयोजित करवाई गई। कुलपति ने विजेताओं को पुरस्कार देकर सम्मानित किया। कार्यक्रम के अंत में सह निदेशक (प्रशिक्षण) डॉ. अशोक गोदारा ने सभी का धन्यवाद किया।

बाजरे की एचएचबी 67 उन्नत-2 संकर किस्म विकसित

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों द्वारा वर्ष 1990 में विकसित की गई बाजरे की किस्म एचएचबी 67 पिछले 30 वर्षों से शुष्क क्षेत्रों के किसानों के लिए वरदान साबित हुई है। विश्वविद्यालय की ओर से इसी किस्म की मांग को देखते हुए तीसरी बार सुधार करके नई किस्म एचएचबी 67 उन्नत-2 विकसित की है जो पहले वाली किस्मों की तुलना में अधिक रोगरोधी है। साथ ही इसमें दाने की पैदावार अधिक है और एचएचबी 67 उन्नत से भी एक दिन पहले पककर तैयार हो जाती है। भारत सरकार ने राजपत्र अधिसूचना के द्वारा इस किस्म को राजस्थान, गुजरात व हरियाणा राज्यों में खेती के लिए अनुशंसा की है।

वर्ष 1990 में विकसित की थी पहली बार यह किस्म

पहली बार वर्ष 1990 में बाजरे की संकर किस्म एचएचबी 67 को विकसित किया गया था जो 60 से 62 दिन में पककर तैयार होती है और 20.9 क्विंटल प्रति हेक्टेयर दाने की पैदावार देती है। वर्ष 2005 में जोगिया रोग बढ़ने के कारण अंतर्राष्ट्रीय संस्थान पाटनचेरू, हैदराबाद के साथ मिलकर एचएचबी 67 उन्नत किस्म विकसित की गई।

मार्कर एसिसटड सलेक्शन तकनीक से सुधारी गई है उन्नत-2 किस्म

एचएचबी 67 उन्नत-2 किस्म एचएचबी 67 उन्नत का ही अधिक उन्नत रूप है। यह किस्म डाउनी मिल्डयू के तीन रोगरोधी तत्वों को इक्ट्ठा करके मार्कर एसिसटड सलेक्शन तकनीक से सुधारी गई है। यह किस्म जोगिया रोग के लिए 58.6 प्रतिशत से अधिक रोगरोधी है एवं इसके दाने की पैदावार भी एचएचबी 67 उन्नत से 16 प्रतिशत तक अधिक है। इसके अतिरिक्त यह किस्म एचएचबी 67 उन्नत से एक दिन पहले पककर तैयार हो जाती है और इसके दानों में प्रोटीन व फैट की मात्रा एचएचबी 67 उन्नत के मुकाबले क्रमश 2 व 5.9 प्रतिशत अधिक है।

इन वैज्ञानिकों के परिश्रम का है परिणाम

बाजरे की उपरोक्त संकर किस्में एचएयू तथा आईसीआरआईएसएटी के बीच लम्बे समय से चले आ रहे सहयोग का परिणाम है। बाजरे की उपरोक्त एचएचबी 67 उन्नत-2 किस्म को भी हकृवि के वैज्ञानिकों देवव्रत, के.डी. सहरावत, अशोक कुमार देहिनवाल, विरेन्द्र मलिक, राव पंकज, एस.के. पाहुजा, अनिल कुमार, एल.के. चुघ, विनोद कुमार मलिक व मुकेश कुमार और आईसीआरआईएसएटी के वैज्ञानिकों राकेश के. श्रीवास्तव, गोपी पोटुपुरेड्डी, सी.टी. हष व ए.जी भास्कर राज ने मिलकर विकसित किया है।

नवागंतुक विद्यार्थियों के लिए ओरिएंटेशन कार्यक्रम

शैक्षणिक सत्र 2021-22 दौरान विश्वविद्यालय में प्रवेश पाने वाले विद्यार्थियों के लिए ओरिएंटेशन कार्यक्रम का आयोजन किया गया। विश्वविद्यालय के कृषि महाविद्यालय में आयोजित कार्यक्रम में कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज मुख्यातिथि रहे। उन्होंने नवागंतुक विद्यार्थियों को शुभकामनाएं देते हुए कहा कि वे बहुत ही भाग्यशाली हैं कि वे अब अंतर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त विश्वविद्यालय का हिस्सा हैं, जिसमें दाखिले के लिए विद्यार्थियों का एक सपना होता है। उन्होंने कहा कि हमारा लक्ष्य विद्यार्थियों का सर्वांगीण विकास है। इसलिए विश्वविद्यालय में खेल, शिक्षा, अनुसंधान व विस्तार के क्षेत्र में विद्यार्थियों के लिए हर संभव प्रयास किए जाते हैं ताकि उन्हें आगे बढ़ने के अधिक से अधिक अवसर मिल सकें।

कुलपति ने कहा विश्वविद्यालय में विद्यार्थियों के लिए अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर विश्व के शीर्ष शिक्षण व अनुसंधान संस्थानों के साथ आदान-प्रदान कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं ताकि उन्हे अपनी प्रतिभा को निखारने का मौका मिल सके। उन्होंने विद्यार्थियों से आह्वान किया कि वे निसंकोच अपनी किसी भी समस्या व विचार को संस्थान के अधिकारियों, विभागाध्यक्षों व हॉस्टल वार्डन आदि के सामने रखें ताकि उसका समय पर समाधान हो सके।

विश्वविद्यालय की सभी गतिविधियों में लें हिस्सा : डॉ. रामनिवास

कृषि महाविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ. रामनिवास ने विद्यार्थियों से आह्वान किया कि वे विश्वविद्यालय में विद्यार्थियों के लिए आयोजित की जाने वाली हर शैक्षणिक, खेलकूद, सांस्कृतिक सहित अन्य गतिविधियों में बढ़-चढकर हिस्सा लें ताकि उनका सर्वांगीण विकास हो सके। इस अवसर पर विश्वविद्यालय के विभिन्न विभागों के अध्यक्षों ने अपने-अपने विभाग द्वारा आयोजित की जाने वाली गतिविधियों को लेकर विस्तारपूर्वक चर्चा की। नवागंतुकों को छात्र कल्याण कार्यक्रमों और नेहरू पुस्तकालय बारे भी जानकारी दी गई। कार्यक्रम में डॉ. मुकेश सैनी ने मंच का संचालन किया।

उधर गृह विज्ञान महाविद्यालय और कृषि अभियंत्रिकी एंव प्रौद्योगिकी महाविद्यालय में भी ओरिएंटेशन कार्यक्रम आयोजित करके नवागंतुक विद्यार्थियों का स्वागत और मार्गदर्शन किया गया।

मानव शृंखला बनाकर एड्स के प्रति किया गया जागरूक

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में विश्व एड्स दिवस के उपलक्ष्य में छात्र कल्याण निदेशालय के रेड रिबन क्लब व राष्ट्रीय सेवा योजना इकाई द्वारा मानव शृंखला बनाकर एड्स के प्रति लोगों को जागरूक किया।

इस अवसर पर विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी. आर. काम्बोज बतौर मुख्यातिथि उपस्थित थे। उन्होंने कहा कि यह मानव शृंखला हम सब की वैश्विक महामारी एड्स के विरुद्ध प्रतिबद्धता को दर्शाती है। उन्होंने कहा हालांकि इतने सालों बाद भी इस जानलेवा बीमारी का कोई इलाज नहीं निकल पाया है इसलिए अपना बचाव ही इससे बचे रहने का एकमात्र उपाय है। उन्होंने कहा विश्व एड्स दिवस मनाने का प्रमुख उद्देश्य एचआईवी संक्रमण की वजह से होने वाली महामारी एड्स के बारे में हर उम्र के लोगों के बीच जागरूकता बढ़ाना है। आज के समय में एड्स सबसे बड़ी स्वास्थ्य समस्याओं में से एक है। यूनिसेफ की रिपोर्ट की मानें तो पूरे विश्व में 3 करोड़ 69 लाख लोग एचआईवी के शिकार हो चुके हैं जबकि भारत सरकार द्वारा जारी किए गए आंकड़ों के अनुसार भारत में एचआईवी के रोगियों की संख्या करीब 21 लाख बताई जा रही है।

छात्र कल्याण निदेशक डॉ. देवेन्द्र सिंह दहिया ने मुख्यातिथि का स्वागत किया जबकि हिसार के एचआईवी एड्स जिला नोडल अधिकारी डॉ. सुशील गर्ग ने एड्स रोग से संबंधित विस्तृत जानकारी दी और छात्रों की शंकाओं का समाधान किया। इस अवसर पर विद्यार्थियों ने हाथों में लाल गुब्बारे, पोस्टर व तख्तियां लेकर एड्स जागरूकता का संदेश दिया।

एड्स - सावधानी ही है बचाव

उधर, विश्वविद्यालय के इंदिरा चक्रवर्ती गृह विज्ञान महाविद्यालय में विश्व एड्स दिवस पर ऑनलाइन व्याख्यान आयोजित किया गया। इस व्याख्यान में महाराजा अग्रसेन मेडिकल कॉलेज के डॉ. भानू प्रताप शर्मा मुख्य वक्ता रहे। उन्होंने विद्यार्थियों को संबोधित करते हुए कहा कि एड्स कोई संचारी रोग नहीं है। इससे बचाव के लिए सावधानी बरतना बहुत जरूरी है।

संविधान दिवस पर वेबिनार का आयोजन
शिक्षा में डॉ. अंबेडकर के योगदान को किया याद

संविधान निर्माता भारत रत्न डॉ. भीमराव अंबेडकर के अथक प्रयासों से ही समाज के सभी वर्गों को बिना किसी लिंग, जाति, धर्म आदि के भेदभाव के शिक्षा का अधिकार मिल पाया है। वर्तमान समय में भी उनके विचार एवं सिद्धांत प्रासंगिक हैं। ये विचार चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने संविधान दिवस के उपलक्ष्य में विश्वविद्यालय में स्थापित डॉ. अंबेडकर चेयर की ओर से शिक्षा में डॉ. भीमराव अंबेडकर के विचार विषय पर आयोजित वेबिनार में बतौर मुख्यातिथि बोलते हुए व्यक्त किए। इस वेबिनार का आयोजन आजादी का अमृत महोत्सव श्रृंखला के तहत किया गया था।

कुलपति ने कहा कि शिक्षा की व्यक्ति निर्माण व विकास में महत्वपूर्ण भूमिका है इसलिए शिक्षा समाज के लिए प्राथमिकता होनी चाहिए। उन्होंने कहा डॉ. अबेंडकर का मानना था कि भारत जैसे विभिन्न वर्गों में बंटे समाज में शिक्षा के माध्यम से सामाजिक समरसता व लोकतांत्रिक मूल्यों का संरक्षण संभव है। यदि समाज में समरस्ता व जीवन मूल्यों का संरक्षण नहीं होगा तो हम आदर्श समाज की स्थापना नहीं कर सकेंगे। उन्होंने कहा भारतीय संविधान ने शिक्षा के साथ अनेक अधिकार प्रदान किए हैं। संविधान दिवस को मनाने के पीछे उद्देश्य यही है कि देश के संविधान के बारे में नागरिकों के बीच जागरूकता लाई जा सके और संविधानिक मूल्यों का प्रचार किया जा सके।

भारतीय शिक्षा के अग्रणी हैं डॉ. अंबेडकर

इस वेबिनार में मुख्य वक्ता सेवानिवृत्त प्राचार्य डॉ. के.सी. अरोड़ा ने कहा कि डॉ. अंबेडकर ने अपने अथक प्रयासों व विलक्षण प्रतिभा से 26 से ज्यादा डिग्रियों को हासिल किया। यही कारण है कि उन्हें भारतीय शिक्षा के क्षेत्र में अग्रणी माना जाता है। डॉ. अंबेडकर के अनुसार विद्या, प्रज्ञा, करूणा, शील व मित्रता आदि गुण केवल शिक्षा से ही मिलते हैं। शिक्षा के बिना समाज, देश व प्रदेश का विकास संभव नहीं है। शिक्षा समानता व नैतिकता की रक्षा करती है। उन्होंने समाज उत्थान व संविधान निर्माण में डॉ. भीमराव अंबेडकर के प्रयासों व योगदान पर विस्तारपूर्वक चर्चा की।

डॉ. अम्बेडकर चेयर के अध्यक्ष एवं मौलिक विज्ञान एवं मानविकी महाविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ. राजवीर सिंह ने सभी का स्वागत किया। डॉ. अम्बेडकर चेयर के सचिव एवं पुस्कालयाध्यक्ष डॉ. बलवान सिंह ने इस वेबिनार के बारे में विस्तारपूर्वक जानकारी दी। डॉ. भूपेंद्र सिंह ने सभी प्रतिभागियों का वेबिनार में शामिल होने पर धन्यवाद किया। इस वेबिनार में करीब 200 प्रतिभागियों ने भाग लिया।

विश्वविद्यालय के वनस्पति उद्यान में गुलदाउदी पुष्प प्रदर्शनी आयोजित

विश्वविद्यालय के वनस्पति उद्यान में 21 से 23 दिसंबर तक आयोजित तीन दिवसीय गुलदाउदी पुष्प्प प्रदर्शनी एवं प्रतियोगिताएं आगंतुकों के लिए एक आनंदमय अनुभव रहा क्योंकि वे आकर्षक रंगों के गुलदाउदी के फूलों के बीच विचरण कर रहे थे, जो चारों ओर दिल को पिघलाने वाली खुशबू बिखेर रहे थे।

विश्वविद्यालय के वनस्पति विज्ञान एवं पौध शरीर क्रिया विज्ञान विभाग, एग्री टूरिज्म सेंटर, भू-दृश्य संरचना इकाई और एचएयू समाज कल्याण समिति के सहयोग से आयोजित इस मेगा इवेंट में गुलदाउदी की छोटी पोम पोम से लेकर बड़े गेंदनुमा 50 से अधिक किस्मों को प्रदर्शित किया गया था। गुलदाउदी के साथ लगाए गए हरे-भरे इनडोर पौधे, बोन्साई और अन्य फूल प्रदर्शनी की शोभा को और बढ़ा रहे थे।

इस पुष्प प्रदर्शनी का शुभारंभ कुलपति की धर्मपत्नी श्रीमती संतोष कुमारी ने किया। उन्होंने इस प्रदर्शनी की भूरि-भूरि प्रशंसा की। उन्होंने कहा कि फूल व वनस्पतियां प्रकृति का अनमोल उपहार हैं। खिलखिलाते फूल व्यक्ति के मन को अपार प्रसन्नता व शान्ति प्रदान करते हैं जिससे मानसिक बीमारियां दूर होती हैं। प्रात: काल फूलों को निहारने से नई ऊर्जा व सकारात्मक सोच उत्पन्न होती है। उन्होंने लोगों से प्रकृति से स्नेह स्थापित करने का आह्वान किया।

इस अवसर पर आठ पौध श्रेणियों में प्रतियोगिता के अलावा स्कूल व कॉलेज के विद्यार्थियों के लिए ऑन द स्पॉट ड्राइंग व पेंटिंग, रंगोली, मेहंदी रचाओ, ताजा व सूखा पुष्प सज्जा आदि प्रतियोगिताएं भी आयोजित की गईं। पुष्प प्रदर्शनी व प्रतियोगिता के समापन अवसर पर कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज मुख्य अतिथि तथा उपायुक्त श्रीमती प्रियंका सोनी व डीआईजी हिसार श्री बलवान सिंह विशिष्ट अतिथि थे। उन्होंने प्रतियोगिताओं की सभी प्रविष्टियों का अवलोकन किया और विजेताओं को पुरस्कार वितरित किए।

कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने इस प्रदर्शनी के प्रति लोगों के उत्साह की प्रशंसा की। उन्होंने कहा इस प्रकार के आयोजन से लोगों में न केवल फूलों व पेड़ पौधों के प्रति आकर्षण बढ़ता है अपितु पर्यावरण के प्रति जागरूकता भी बढ़ती है। उन्होंने कहा एक ही स्थान पर गुलदाउदी की विशाल विविधिता देखना वास्तव में एक बहुत सुखद अनुभव है। उन्होंने कहा लोगों को फूल पौधों को अपनी हॉबी में शामिल करके अपने घर को सुंदरता प्रदान करनी चाहिए। इससे पर्यावरण भी स्वच्छ होगा। इस अवसर पर उपस्थित वनस्पति विज्ञान विभाग के अध्यक्ष डॉ. के.डी. शर्मा ने कहा कि इस प्रदर्शनी ने शहरवासियों के बीच काफी लोकप्रियता हासिल की है। वे हर साल इस प्रदर्शनी का बेसब्री से इंतजार करते हैं।

राजकीय उच्च विद्यालय में जरूरतमंद बच्चों को वितरित की गई स्कूल ड्रेस

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय परिसर में स्थित राजकीय उच्च विद्यालय में जरूरतमंद बच्चों को सर्दियों के लिए स्कूल ड्रेस वतरित की गई। कार्यक्रम का आयोजन विश्वविद्यालय की समाज कल्याण समिति की ओर से बैंक ऑफ बरोदा के सहयोग से किया गया था जिसमें कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज की धर्मपत्नी, समाज कल्याण समिति की अध्यक्ष श्रीमती संतोष कुमारी बतौर मुख्यातिथि उपस्थित हुई। उन्होंने समिति के सभी सदस्यों की उनके सहयोग व सेवा भावना के लिए सराहना की और भविष्य में भी इस प्रकार के समाज कल्याण के कार्य करते रहने का आह्वान किया। इस दौरान 120 जरूरतमंद विद्यार्थियों को सामान वितरित किया गया जिसमें स्कूल ड्रेस, जर्सियां व जूते शामिल थे। इस अवसर पर राजकीय उच्च विद्यालय की मुख्याध्यापिका कविता ने इस नेक कार्य के लिए विश्वविद्यालय की उपरोक्त समिति व बैंक का धन्यवाद किया।

कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने पुनर्जीवित की थी समिति

समाज कल्याण समिति की स्थापना विश्वविद्यालय के प्रथम कुलपति श्री ए.एल. फ्लेचर ने की थी लेकिन पिछले 15 वर्षों से यह समिति पूर्णत: निष्क्रिय थी। वर्तमान कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने इस समिति का दोबारा से गठन किया और इसे पुनर्जीवित किया।

इस समिति के पुनर्गठन के बाद यह दूसरा कार्यक्रम है जिसके तहत जरूरतमंद बच्चों को सामान वितरित किया गया है। इससे पहले कैंपस स्कूल के 110 जरूरतमंद विद्यार्थियों को जर्सियां व हॉट केस टिफिन वितरित किए गए थे। इस अवसर पर बैंक प्रबंधक सुनील कुमार, समिति के सचिव कपिल अरोड़ा सहित अन्य सदस्य भी मौजूद रहे। समिति के सदस्यों ने इस दौरान भविष्य की कार्ययोजना को लेकर भी विचार विमर्श किया।

संगोष्ठी/कार्यशाला/प्रशिक्षण में सहभागिता

- डॉ. अनिल कुमार व डॉ. जे.ऐ. पाटिल, सहायक वैज्ञानिक, सूत्रकृमि विज्ञान विभाग ने एग्रीकल्चरल रिसर्च मेथाडोलॉजी, प्रैक्टिसिस एंड देअर मैनेजमेंट विषय पर 4 से 24 अक्तूबर तक केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय, पासीघाट, अरूणाचल प्रदेश द्वारा आयोजित वैज्ञानिक प्रशिक्षण कार्यक्रम में भाग लिया।
- डॉ. सरोज यादव, सहायक प्राध्यापक, सूत्रकृमि विज्ञान विभाग ने भारतीय सूत्रकृमि समिति द्वारा 29-30 अक्तूबर को वर्चुअल मोड से आयोजित संगोष्ठी में भाग लेकर 'द फैसेट ऑफ इनोवेशन एंड डेवलपमेंट ऑफ प्लांट नेमाटोलॉजी' विषय पर पेपर प्रस्तुत किया।
- डॉ. सरदूल मान, डीईएस (नेमाटोलॉजी) ने ग्लोबल रिसर्च इनिशिएटिव फॉर ससटेनेबल एग्रीकल्चर एंड एलाइड सांइसिस विषय पर आशा फाउंडेशन, मेरठ द्वारा वर्चुअल मोड से आयोजित किए गए छठे अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन में पेपर प्रस्तुत किया।
- डॉ. विनोद कुमार, सहायक वैज्ञानिक व डॉ. सरोज यादव, सहायक प्राध्यापक, सूत्रकृमि विज्ञान विभाग ने 21-22 दिसम्बर को आईसीएआर-भारतीय उद्यान अनुसंधान संस्थान, बैंगलुरू द्वारा वर्चुअल मोड से प्लांट प्रोटेक्शन इन हॉर्टिकल्चर: चैलेंजिस एंड ए रोड़मैप अहेड विषय पर आयोजित पांचवे राष्ट्रीय सम्मेलन में पेपर प्रस्तुत किया। उन्होंने चौ.च.सिं. हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के मानव संसाधन प्रबंधन निदेशालय द्वारा एप्लीकेशन ऑफ स्टैटिस्टिकल एंड इकोनोमेट्रिक टेक्नीकस इन एग्रीकल्चर विषय पर 9 से 29 नवम्बर तक आयोजित रिफ्रेशर कोर्स में भी भाग लिया।
- डॉ. रेखा, खाद्य विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी केन्द्र ने भारतीय खाद्य प्रासंस्करण प्रौद्योगिकी संस्थान द्वारा 4-8 सितम्बर तक रिसेंट ट्रेंड्स इन नॉन-थर्ममल प्रोसैसिंग: प्रॉस्पैक्टस एंड चैलेंजस विषय पर आयोजित फैकल्टी डेवलपमेंट प्रोग्राम में भाग लिया।
- डॉ. सुमन गहलावत व डॉ. अमिता गिरधर, व्यवसाय प्रबंधन विभाग ने मानव संसाधन प्रबंधन निदेशालय, चौ.च.सिं. हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय द्वारा 21 सितम्बर-11 अक्तूबर तक शैक्षणिक प्रौद्योगिकी विषय पर आयोजित रिफ्रेशर कोर्स में भाग लिया।
- डॉ. अपर्णा, भाषा एवं हरियाणवी संस्कृति विभाग ने पट्रोलियम एवं ऊर्जा अध्ययन विश्वविद्यालय, देहरादून, उत्तराखण्ड में 22-26 नवम्बर तक आयोजित फैकल्टी डेवलपमेंट प्रोग्राम ऑन एक्वाइरिंग लाइफ स्किलस फॉर प्रोफैशनल्स में भाग लिया।
- डॉ. देवेन्द्र सिंह, सहायक प्राध्यापक, भाषा एंव हरियाणवी संस्कृति विभाग ने आईक्यूएसी व समाजशास्त्र विभाग, राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, उज्जैन द्वारा ह्यूमन राइट्स एंड सोसाइटी विषय पर 10 दिसम्बर को आयोजित अंतर्राष्ट्रीय वेबिनार में भाग लिया। उन्होंने 14-18 दिसम्बर तक राजकीय विक्रम महाविद्यालय, खचरोड़, उज्जैन में पर्सनालिटी डेवलपमेंट विषय पर आयोजित फैकल्टी डेवलपमेंट प्रोग्राम में भी भाग लिया।
- डॉ. शिखा मेहता व डॉ. सीमा सांगवान, सूक्ष्मजीव विज्ञान विभाग तथा डॉ. देवव्रत, सहायक वैज्ञानिक, पौध प्रजनन ने मानव संसाधन प्रबंधन निदेशालय, चौ.च.सिं. हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय द्वारा एप्लीकेशन ऑफ स्टैटिस्टिकल एंड इकानमेट्रिक टेक्नीकस इन एग्रीकल्चर विषय पर 24 नवम्बर-14 दिसम्बर तक आयोजित रिफ्रेशर कोर्स में भाग लिया।
- डॉ. बलजीत सिंह सहारण ने 1-2 दिसम्बर तक एडवांसिज़ इन माक्रोबियल टेकनोलॉजीस विषय पर एमिटी विश्वविद्यालय, राजस्थान में आयोजित सम्मेलन में तकनीकी सत्र की अध्यक्षता की और मुख्य संभाषण भी दिया। उन्होंने बागवानी निदेशालय, हरियाणा सरकार द्वारा 29 दिसम्बर को जीरो बजट प्राकृतिक व जैविक खेती की नई योजना निर्माण विषय पर आयोजित कार्यशाला में भाग लिया। वह ग्रीन एनवायरमेंट सोसाइटी के लाइफ टाइम फैलो भी चुने गए हैं।
- डॉ. के.के. कुण्डु, सह प्राध्यापक, कृषि अर्थशास्त्र विभाग ने पशु चिकित्सा महाविद्यालय, लुधियाना द्वारा 10-11 दिसम्बर को आयोजित भारतीय भैंस विकास समिति के राष्ट्रीय सम्मेलन में दो पेपर प्रस्तुत किए।
- इंजि. नरेश व डॉ. गणेश उपाध्याय, फार्म मशीनरी एण्ड पॉवर इंजिनियरिंग विभाग ने 13-16 नवम्बर तक कृषि विज्ञान संस्थान, बनारस हिन्दु विश्वविद्यालय, वाराणसी में राष्ट्रीय कृषि विज्ञान अकादमी व बनारस हिन्दु विश्वविद्यालय द्वारा आयोजित 15वीं कृषि विज्ञान कांग्रेस एवं एएससी एक्सपो में भाग लिया।
- डॉ. विजया रानी व डॉ. अनिल कुमार, फार्म मशीनरी एण्ड पॉवर इंजिनियरिंग विभाग ने आईएसएई, नई दिल्ली और डॉ. राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय, पूसा, बिहार द्वारा 23-25 नवम्बर तक संयुक्त रूप से ऑनलाइन आयोजित आईएसएई के 55वें वार्षिक सम्मेलन में भाग लिया।
- डॉ. सतपाल बलौदा, सहायक बागवानी विशेषज्ञ, बागवानी विभाग ने श्री गुरू रामराय विश्वविद्यालय, देहरादून में 17-18 अक्तूबर तक ग्लोबल इनिशिएटिव इन एग्रीकल्चर, फोरेस्ट्री एंड एप्लाइड सांइसिस विषय पर आयोजित तीसरे अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन में पेपर प्रस्तुत किया।

....पृष्ठ 8 का शेष

उन्होंने स्वयंसेवकों को राष्ट्रीय सेवा योजना के मोटो 'मैं नहीं, आप' को आत्मसात करते हुए समाज में नि:स्वार्थ भाव से सेवा करने के लिए प्रेरित किया। इस अवसर पर सभी स्वयंसेवकों व कार्यक्रम अधिकारियों को सहभागिता के लिए प्रमाण-पत्र प्रदान किए गए।

राष्ट्रीय स्वयंसेवकों ने ली राष्ट्रीय एकता की शपथ

विश्वविद्यालय में लौह पुरूष सरदार वल्लभभाई पटेल की जयंती के उपलक्ष्य में 31 अक्तूबर को राष्ट्रीय एकता दिवस का आयोजन किया गया। इस अवसर पर छात्र कल्याण निदेशक डॉ. देवेन्द्र सिंह दहिया ने विद्यार्थियों को राष्ट्रीय एकता की शपथ दिलाई। उन्होंने कहा कि हमें राष्ट्रहित को सर्वोपरि रखते हुए जीवन में आगे बढ़ना चाहिए और सरदार वल्लभभाई पटेल के विचारों और उनके आचरण को अपने जीवन में धारण करना चाहिए। इस मौके पर राष्ट्रीय सेवा योजना के कार्यक्रम अधिकारी डॉ. चंद्रशेखर डागर ने सरदार वल्लभभाई पटेल से जुड़े कुछ प्रेरक प्रसंग विद्यार्थियों के साथ सांझा किए।

संक्षिप्त समाचार

कृषि महाविद्यालय, हिसार

- कृषि महाविद्यालय के वानिकी विभाग की ओर से कृषि वानिकी पर अखिल भारतीय समन्वित अनुंसधान परियोजना के तहत भिवानी के रनीला गांव में 30 दिसम्बर को बाऊंड्री प्लांटेशन जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस अवसर पर डॉ. छवि सिरोही, डॉ. के.एस. अहलावत व डॉ. सुशील कुमारी ने किसानों को भारत सरकार के "हर मेढ़ पर पेड़" अभियान के उद्देश्य एवं चारा, ईंधन व भवनों के लिए लकड़ी हेतु बाऊंड्री प्लांटिंग की उपयोगिता बारे बताया।
- पौध रोग विज्ञान विभाग द्वारा 23 दिसम्बर को खुम्बी दिवस मनाया गया जिसका विषय "मशरूम फॉर कम्पलीट एग्रो-वेस्ट मैनेजमेंट" रहा। इस कार्यक्रम में 50 से अधिक किसानों ने भाग लिया।
- औषधीय, सगंध एवं क्षमतावान फसल अनुभाग ने 7 दिसम्बर व 10 दिसम्बर को क्रमशः कृषि विज्ञान केन्द्र, दामला (यमुनानगर) व चौ.च.सिं. हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार में अनुसूचित जाति के किसानों को औषधीय, सगंध एवं क्षमतावान फसलों की खेती के प्रति जागरूक करने के लिए प्रशिक्षणों का आयोजन किया। इन प्रशिक्षणों में 30-30 की संख्या में किसानों ने भाग लिया। प्रशिक्षणों के समापन पर प्रतिभागी किसानों को उपरोक्त फसलों की समग्र सिफारिशों की पुस्तक, अंकुरण, करतनी, बीज और पौध सामग्री वितरित की गई। उपरोक्त प्रशिक्षणों के निदेशक डॉ. पवन कुमार रहे जबकि इनका संयोजन डॉ. राजेश आर्य ने किया।

मौलिक विज्ञान एवं मानविकी महाविद्यालय

- मौलिक विज्ञान एवं मानविकी महाविद्यालय के समाज शास्त्र विभाग द्वारा अग्रोहा खण्ड के गांव नंगथला में एक जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में विश्वविद्यालय के अनुसंधान निदेशक डॉ. एस.के. सहरावत बतौर मुख्यातिथि मौजूद रहे जबकि अध्यक्षता महाविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ. राजवीर सिंह ने की। गांव नंगथला को उन्नत भारत अभियान एवं आदर्श ग्राम योजना के तहत विश्वविद्यालय द्वारा गोद लिया गया है। मुख्यातिथि ने कहा कि विश्वविद्यालय किसानों, बेरोजगार युवक-युवतियों, महिलाओं से आह्वान किया कि वे ज्यादा से ज्यादा संख्या में विश्वविद्यालय से जुड़कर लाभ उठाएं। उन्होंने कहा कि विश्वविद्यालय द्वारा समय-समय पर विभिन्न प्रकार के प्रशिक्षण आयोजित किए जाते हैं जिनको हासिल कर ग्रामीण स्वरोजगार स्थापित कर सकते हैं। डॉ. राजवीर सिंह ने कहा कि किसान आधुनिक तकनीकों को अपनाकर अपनी फसलों की पैदावार में इजाफा कर सकते हैं। साथ ही कृषि विविधिकरण अपनाकर व प्रशिक्षण हासिल कर अपनी आमदनी बढ़ा सकते हैं। डॉ. बलजीत सहारण ने ग्रामीणों को जैव उर्वरक के महत्व को लेकर एक डेमो दिया। मंच का संचालन डॉ. रश्मि त्यागी ने किया। विभागाध्यक्ष डॉ. विनोद कुमारी ने सभी का स्वागत किया जबकि धन्यवाद डॉ. जतेश काठपालिया ने किया।

इंदिरा चक्रवर्ती गृह विज्ञान महाविद्यालय

- विस्तार शिक्षा एवं संचार प्रबंधन विभाग द्वारा दिसम्बर माह में फतेहाबाद के हसिंगा व शानल गांवों में ग्रामीण महिलाओं के बीच पालक के उत्पादों के प्रचार और व्यवहार्यता मूल्यांकल विषय पर जबकि केवल हसिंगा गांव में मूंगफली उत्पादों का ग्रामीण महिलाओं के बीच प्रसार और व्यवहार्यता मूल्यांकल विषय पर प्रशिक्षण आयोजित किए गए। प्रत्येक प्रशिक्षण में 30 ग्रामीण महिलाओं ने भाग लिया।
- मानव विकास एवं परिवार अध्ययन विभाग ने 14 अक्तूबर को महिला किसान दिवस पर लुदास गांव में महिलाओं को उनके सशक्तिकरण के लिए सरकार की विभिन्न योजनाओं बारे जागरूक किया। विभाग की ओर से 26 नवम्बर को खरड़ गांव के सरकारी उच्च विद्यालय में संविधान दिवस मनाया गया। स्कूल के विद्यार्थियों को संविधान की प्रस्तावना का वर्णन किया गया। इस अवसर पर संविधान के प्रति वचनबद्धता की प्रतिज्ञा भी ली गई।
- उपरोक्त विभाग द्वारा 26 नवम्बर को संविधान दिवस पर सरकारी उच्च विद्यालय, खरड़ में कार्यक्रम आयोजित करके विद्यार्थियों को भारतीय संविधान की शपथ दिलाई गई। इसके अतिरिक्त विभाग द्वारा 23 से 30 नवम्बर तक बुड़ाक गांव की नवयुवतियों व महिलाओं को नरम खिलोने बनाना (6 से 8 दिसम्बर तक आधुनिक चुल्हा निर्माण और 7 से 14 दिसम्बर) तक आधुनिक कृत्रिम आभूषण पर प्रशिक्षण प्रदान किए गए।

कृषि अभियांत्रिकी एवं प्रौद्योगिकी महाविद्यालय

- जापान की टोक्यों यूनिवर्सिटी ऑफ एग्रीकल्चर में आयोजित 20वें अन्तर्राष्ट्रीय विद्यार्थी सम्मेलन में कृषि अभियांत्रिकी की दूसरे वर्ष की छात्रा साक्षी चुघ और कृषि महाविद्यालय के तीसरे वर्ष के छात्र वत्सल अरोड़ा ने भाग लिया और अवार्ड जीते। साक्षी चुघ को 'मोस्ट डेडिकेटिड लर्नर' और वत्सल अरोड़ा को 'बेस्ट डिस्कशन' का अवार्ड मिला।

मानव संसाधन प्रबंधन निदेशालय

- मानव संसाधन प्रबंधन निदेशालय की कृषि अनुसंधान एवं शिक्षा प्रबंधन अकादमी द्वारा कृषि अर्थशास्त्र विभाग की सहभागिता से 'एप्लीकेशन ऑफ स्टैटिस्टिकल एण्ड इकानमेट्रिक टेक्नीकस इन एग्रीकल्चर' विषय पर 24 नवम्बर से 14 दिसम्बर तक रिफ्रेशर कोर्स का आयोजन किया गया। इस रिफ्रेशर कोर्स में हरियाणा, पंजाब और हिमाचल प्रदेश से 29 वैज्ञानिकों/ प्राध्यापकों/ विस्तार विशेषज्ञों ने भाग लिया। रिफ्रेशर कोर्स के समापन समारोह में कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने प्रतिभागियों को प्रमाण-पत्र वितरित किए। उन्होंने उनसे रिफ्रेशर कोर्स दौरान प्राप्त ज्ञान को व्यवहारिक्ता में लाए जाने पर बल दिया। मानव संसाधन प्रबंधन निदेशक डॉ. अतुल ढींगड़ा के मार्गदर्शन में आयोजित किए गए इस कोर्स का संयोजन डॉ. जितेन्द्र कुमार भाटिया, डॉ. दलीप कुमार बिश्नोई, डॉ. मोनिका व डॉ. जोगेन्द्र कुमार ने

संक्षिप्त समाचार

किया।

- उपरोक्त अकादमी ने विश्वविद्यालय के कम्प्यूटर संभाग के सहयोग से 8 से 12 नवम्बर तक कम्प्यूटर एप्रिसिएशन एण्ड एप्लिकेशन में राज्य पात्रता परीक्षा के लिए प्रशिक्षण व परीक्षा का आयोजन किया।
- मानव संसाधन प्रबंधन निदेशालय ने प्रशिक्षण, अनुसंधान और विस्तार में सहयोग के लिए धानुका एग्रीटेक लिमिटेड, नई दिल्ली के साथ 17 नवम्बर को तीन वर्ष के लिए एमओयू किया।
- निदेशालय द्वारा कीट विज्ञान विभाग और क्षेत्रीय अनुसंधान केन्द्र, करनाल के डॉ. ओ.पी. चौधरी, रिंकू पूनिया व अजय के अविष्कार "डबल एंट्रैंस हनीबी हाइव फॉर पॉलिनेशन इन एन्कलोजर"; खाद्य विज्ञान व प्रौद्योगिकी केन्द्र की डॉ. रूपा, अंजु कुमारी, अनिल पंघाल व राकेश कुमार के अविष्कार "फंक्शनल योगर्ट एनरिचड विद स्प्रे ड्राइड व्हीटग्रास पाउडर"; प्रसंस्करण एवं खाद्य अभियान्त्रिकी विभाग के सुनील कुमार, अरूण कुमार, अटकान, अनिल पंघाल, नितिन कुमार व रवि गुप्ता के अविष्कार "ए मशीन फॉर डिटॉपिंग ऑफ रूट वेजिटेबल" को पेटेंट करवाने के लिए आवेदन किए गए हैं।

छात्र कल्याण निदेशालय

- संयुक्त राष्ट्र संघ के स्थापना दिवस पर वार्तालाप एवं प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। छात्र कल्याण निदेशक डॉ. देवेन्द्र सिंह दहिया की अध्यक्षता में हुए इस कार्यक्रम में डॉ. राजेश कथवाल मुख्य वक्ता रहे। कार्यत्स में विभिन्न महाविद्यालयों के 111 विद्यार्थियों ने भाग लिया। प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता में कृषि महाविद्यालय कौल के बी.एससी. (ऑनर्स) कृषि के छात्र दानवीर सिंह ने प्रथम, द्वितीय वर्ष की छात्रा अन्जु देवी ने दूसरा और द्वितीय वर्ष की छात्रा अनु ने तीसरा स्थान प्राप्त किया। डॉ. दहिया ने सभी प्रतिभागियों व विजेताओं को शुभकामनाएं दीं। कार्यक्रम में एन.एस.एस. के कार्यक्रम अधिकारी डॉ. चन्द्रशेखर, लिटरेरी एंड डिबेटिंग सोसायटी की अध्यक्ष डॉ. अपर्णा और कार्यक्रम संयोजक भी उपस्थित रहे।
- अंजता छात्रावास में दीपावली से पूर्व दीपावली मिलन समारोह आयोजित किया गया। इस अवसर पर कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज मुख्यातिथि थे। उन्होंने छात्रावास में रह रहे विद्यार्थियों और स्टाफ को दीपावली की शुभकामनाएं दीं। उन्होंने इस अवसर पर बोलते हुए कहा कि हमारे त्यौहार व रीति-रिवाज हमारी सांस्कृतिक धरोहर हैं जो हमें एकता का संदेश देते हैं। हमें सभी भदेभावों को मिटाकर इन्हें मिलकर प्रेम व भाईचारे से मनाना चाहिये। इस मौके पर छात्रों ने कुलपति को माँ लक्ष्मी का चित्र भेंट किया। इससे पूर्व छात्र कल्याण निदेशक डॉ. देवेन्द्र सिंह दहिया ने कुलपति का स्वागत किया।

रामधन सिंह बीज फार्म

- रामधन सिंह बीज फार्म द्वारा अक्तूबर से दिसम्बर तक कुल 1980 एकड़ भूमि जिसमें 1208 एकड़ में राया, 517 एकड़ में गेहूं, 147 एकड़ में चना, 46 एकड़ में जई और 62 एकड़ में जौ की फसलों की बीजाई की गई। इसके अतिरिक्त इन फसलों की विभिन्न किस्मों के तीन हजार क्विंटल बीज की बिक्री की।

क्षेत्रीय अनुसंधान केन्द्र समाचार

प्राकृतिक खेती पर कार्यशाला

क्षेत्रीय अनुसंधान केन्द्र, करनाल और भारतीय गेंहू व जौ अनुसंधान संस्थान, करनाल के संयुक्त तत्वावधान में 20 दिसम्बर को प्राकृतिक खेती पर कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यशाला में प्राकृतिक या जैविक खेती कर रहे किसानों ने भाग लिया। इस अवसर पर क्षेत्रीय अनुसंधान केन्द्र के निदेशक डॉ. ओ. पी. चौधरी ने प्राकृतिक खेती में उत्पादन और पौध संरक्षण पहलुओं पर जबकि डॉ. ओ.पी. अहलावत ने जैविक कचरे को जैविक खाद में बदलने की विधि पर चर्चा की।

प्राकृतिक खेती उत्पादों की मार्केटिंग पर कार्यशाला

क्षेत्रीय अनुसंधान केन्द्र, करनाल ने 29 दिसम्बर को जैविक खेती और प्राकृतिक खेती उत्पादों के उत्पादन, प्रसंस्करण, मूल्य संवर्धन व विपणन में जुटे किसानों के लिए कार्यशाला का आयोजन किया। उपरोक्त केन्द्र के निदेशक डॉ. ओ.पी. चौधरी व इन्दौर के श्री नवल किशोर रघुवंशी के मार्गदर्शन में आयोजित इस कार्यशाला में प्रतिभागी किसानों ने जैविक व प्राकृतिक खेती बारे अपने अनुभवों को सांझा किया।

गन्ना उत्पादन पर प्रशिक्षण

उपरोक्त केन्द्र द्वारा स्टेट केन डिपार्टमैंट व शुगरफैड के सहयोग से गन्ना पर कीटों व बीमारियों के बढ़ रहे प्रकोप विषय को लेकर 25 नवम्बर को प्रशिक्षण का आयोजन किया गया। इस प्रशिक्षण में 50 से अधिक गन्ना उत्पादक किसानों ने भाग लिया। प्रशिक्षण दौरान डॉ. रमेश कुमार ने हरियाणा में उगाई जा रही गन्ना की विभिन्न किस्मों पर प्रकाश डाला। डॉ. संदीप रावल ने गन्ना का उत्पादन बढ़ाने में आधुनिक सस्य क्रियाओं का महत्व जबकि डॉ. ओ.पी. चौधरी ने कीटों के बढ़ते प्रकोप के कारकों पर विस्तारपूर्वक चर्चा की। डॉ. राकेश महरा ने गन्ना पर बीमारियों के प्रकोप के लिए जिम्मेवार घटकों की व्याख्या की।

फसल अवशेष प्रबंधन पर जागरूकता अभियान

उक्त केन्द्र की ओर से राज्य कृषि व किसान कल्याण विभाग के सहयोग से 25 से 30 सितम्बर तक करनाल जिला के विभिन्न ब्लॉक में फसल अवशेष प्रबंधन के लिए जागरूकता अभियानों का आयोजन किया गया। इसके अन्तर्गत किसानों को फसल अवशेष प्रबन्धन की विभिन्न विधियों, मशीनों व यन्त्रों की व्यवहारिक जानकारी दी गई।

HAU's business incubation centre wins national award

TRIBUNE NEWS SERVICE

HISAR, NOVEMBER 12

Chaudhary Charan Singh Haryana Agricultural University's (HAU) Agri Business Incubation Centre (ABIC) has been conferred with the Agri Food-Empowering India Award-2021.

Union Minister of State (MoS) for Food Processing Industries Prahlad Singh Patel presented this award to Vice Chancellor BR Kamboj at an award function held in

एचएयू वैज्ञानिकों ने खोजी बाजरे की नई बीमारी

TRAINING CAMP ON KITCHEN GARDENING

Hisar: A three-day training camp on kitchen gardening was organised by Saina Nehwal Agricultural Training and the Education Institute of Chaudhary Charan Singh Haryana Agricultural University. Experts motivated unemployed youth and women to explore self-employment avenues. Giving information about training, the expert said mechanisation and value addition had a special role in increasing the production capacity of vegetable crops. About 30 per cent of the vegetables grown in the farmers' fields get spoiled due to lack of proper storage facilities. About 60 participants from di

विश्वविद्यालय का पब्लिक प्राइवेट पार्टनरशिप के तहत तकनीकी व्यवसायीकरण को बढ़ावा

हकृवि का नामी कम्पनियों से समझौता, किसानों तक पहुंचेंगी खेती की किस्में

कृषि संबंधी अनुसंधान का उत्पादन बढ़ोतरी के साथ पर्यावरण संरक्षण भी हो लक्ष्य : प्रो. कांबोज

अटल रैंकिंग में एचएयू लगातार दूसरी बार देशभर में प्रथम

NUTRITION MONTH CONCLUDES

Hisar: The closing ceremony of National Nutrition Month was organised by the food and nutrition department of Home Science College, Chaudhary Charan Singh Haryana Agricultural University at Budak village of the district. The wife of HAU Vice-Chancellor Prof BR Kamboj, Santosh was present at the function as the chief guest. She appreciated the work of women empowerment being done by Home Science College.

लक्ष्य निर्धारित कर करें मेहनत, डॉ. अब्दुल कलाम के जीवन से लें प्रेरणा : प्रोफेसर बी.आर. काम्बोज

त्यौहार देते हैं आपसी भाईचारे व सौहार्द की भावना का संदेश : कम्बोज

एचएयू के अजन्ता छात्रावास में धूमधाम से मनाया दीवाली पर्व

गुजरात के किसानों ने एचएयू का दौरा कर सीखी जैविक व प्राकृतिक खेती की प्रक्रिया

ORIENTATION PROGRAMME

Hisar: Vice-Chancellor of Chaudhary Charan Singh Haryana Agriculture University (HAU) Professor BR Kamboj said needed to strike a balance between challenges and opportunities for success in career and in life. The Vice Chancellor was addressing the orientation programme for the newly arrived students at HAU as the chief guest. The programme was organised by the College of Agriculture for the students of Hisar, Kaul (Kaithal) and Bawal (Rewari) four years and six year B Sc Agriculture (hons) courses. The VC welcomed the new students and said they were to be part of a university of international repute.

तकनीक से शिक्षण को बेहतर बना सकते हैं शिक्षक

फसलों की समग्र सिफारिशें आसान भाषा में दें वैज्ञानिक, कम पढ़े लिखे किसान भी फायदा उठा सकें : वीसी

मीडिया एडवाइज़र

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार- 125 004

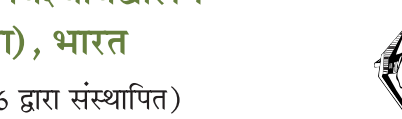

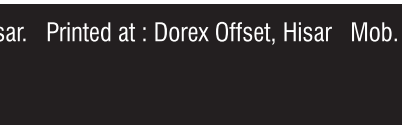

दूरभाष : 01662-284330, 289307

ई-मेल : mediaadvisorhau@gmail.com / prohaunews@gmail.com

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय

हिसार- 125 004 (हरियाणा), भारत

(1970 की संसदीय अधिनियम संख्या 16 द्वारा संस्थापित)

दूरभाष : 01662-237720-21, 289502-10

वेबसाईट : www.hau.ac.in

Published by Media Advisor on behalf of CCS Haryana Agricultural University, Hisar. Printed at : Dorex Offset, Hisar Mob. 98960-11117